मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

फ़्रांस हमले

"इसमें कोई संदेह नहीं कि जो कुछ हुआ वह अमानवीय कार्य था और उसको हर व्यक्ति नापसंद करेगा, जिसके सीने में धड़कता हुआ दिल है, जो मानवता का दर्द रखता है और उसके लिए सोचता है, अकारण किसी को मार डालना कुरआन के शब्दों में पूरी मानवता का क़त्ल है। ग़ौर करने की बात यह है कि यह किसने किया और क्यों किया? इसके क्या कारण थे? यह घटना कोई नई नहीं है, इस प्रकार की घटनाएं होती रहती हैं और हमेशा ऐसी घटनाओं का वास्तविक से पड़ताल करने के बजाए ओछे रूप से इसको इतिहास का एक हिस्सा बनने दिया जाता है और यह प्रयास कभी नहीं किया जाता कि उसकी तह तक पहुंच कर उसके वे स्त्रोत बन्द किए जाएं जहां से ऐसी घटनांए होती हैं। यह देखने की आवश्यकता है कि पानी कहां मर रहा है। बार–बार की लीपा–पोती से बात बनने वाली नहीं है।"

DEC 2015

₹10/-

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

मुस्लिम समुदाय के लिए सबसे बड़ा ख़तरा

मुसलमानों को इस बात की ओर बुलाने की आवश्यकता है कि वे अपने ज़माने को समझें, ज़माने की मुश्किलें व समस्यांए, इसमें जारी रहने वाले रूझानात, आन्दोलन, इस्लाम के बारे में उनके रवैये, जीवन पर पड़ने वाले उनके प्रभाव, दीन के भविष्य के लिए उनसे होने वाले ख़तरे और नई मुस्लिम नस्ल के दिमाग़ पर पड़ने वाले सायों को ध्यान में रखना सीखें। उन नेतृत्वों के उद्देश्यों और उनके लक्ष्यों से अनभिज्ञ न रहें। जो देशों पर व समाज पर अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहते हैं। जो समाज को अपनी आस्थाओं अपने कार्यों और अपने नज़रियों और अपने आदर्शों के सांचों में ढालना चाहते हैं। जो ज़िन्दगी को नई राह व नया मोड़ देना चाहते हैं। उन ताक़तों, रूझानों, कार्यों और नेतृत्व को नज़रअन्दाज़ करना और दीनी जमाअतों का अपने ख़ोल में बन्द रहना ख़ुद इन तहरीकों के लिए ख़तरनाक बन सकता है। इन तहरीको की दीनी दावत, उनकी कार्यवाहियां, अगर फ़र्ज़ व वाजिब पाकी व सम्मान का जीवन और नफ़िल के एहतिमाम तक सीमित रहे तो ख़तरा इस बात का है कि कुछ समय बीतने के बाद दीन पर अमल और शरई आदेशों को लागू करने की आज़ादी ख़त्म कर दी जाएगी। और हालात उनके लिए इतने मुश्किल हो जाएंगे जिसकी तस्वीर कुरआन ने इस तरह से की है कि: "ज़मीन उन पर बावजूद अपनी फ़र्राख़ी के तंग हो गयी और वे ख़ुद अपनी जानों में तंग आ गए।" जज़्बाती नारों, दावों की खोखली बहादुरी के प्रदर्शनों से धोखा खाने के लिए हर वक़्त तैयार रहना ज़बरदस्त ख़तरा है। ख़ास तौर पर इस उम्मत के लिए अपने अक़ीदे पर और अपने पैग़ाम पर जमे रहने के लिए और इनसानों की हिदायत व रहनुमाई का काम करने के लिए बल्कि उससे भी बढ़कर आसमानी शरीअत और उसके आख़िरी दीन पर क़ायम रहने के लिए, इस तरह मुसलमानों का यह रवैया पुराने ज़माने से लेकर इस समय तक के उनके सुधारको, मुजाहिदों और इस्लामी दावत की राह में अपनी जान क़ुर्बान करने वाले शहीदों की सभी कोशिशों पर पानी फेर सकता है। इससे ख़तरा इस बात का पैदा हो गया है कि इस उम्मत में और पुराने इस्लामी देशों में भी पश्चिमी ईसाईयों का यह विचार कार्यरत नज़र आने लगे कि, दीन एक ज़ाती मामला है, जो अल्लाह और बन्दे के बीच सीमित है। क़ानून साज़ी, राजनीति और ज़िन्दगी के दूसरे हिस्सों में इसका कोई दख़ल नहीं।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:१२ दिसम्बर २०१५ ई० वर्ष:६

संरक्षकः हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सह सम्पादक
मौ० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुद्रक
मौ० हसन नदवी

अनुवादक
मोहम्मद सैफ़

E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

हक़ीक़त या फ़साना..२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अल्लाह के प्रतीक की महानता.........................३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

नमाज़ – मोमिन की मेराज...........................५
मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी

पवित्र जीवनी– कुरआन करीम की रोशनी में......७
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सफलता की कुन्जी.....................................९
अब्दुस्सुब्हान नाखुदा नदवी

नमाज़ के वाजिबात...................................१०
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

ख़ुदा की पनाह...१४
सऊदुल हसन ग़ाज़ीपुरी नदवी

समाज की दो गंभीर बीमारियाँ........................१५
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

परलोक पर आस्था.....................................१६
मुहम्मद नजमुद्दीन नदवी

आई एस आई एस.......................................२०
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

सम्पादकःबिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,य०पी0.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉं, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

प्रति अंक 10रू

वार्षिक 100रू0

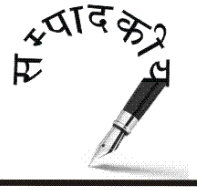

सम्पादकीय

हक़ीक़त या फ़साना

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

फ़्रांस में होने वाले हालिया बम धमाको ने दुनिया में एक हलचल मचा रखी है। मीडिया के पास यह इस समय एक ऐसा विषय है जो हर ख़ास व आम के ध्यानाकर्षण का कारण बना हुआ है और इस पर विभिन्न प्रकार के बयानों व स्पष्टीकरणों का एक ऐसा क्रम है जो लगातार जारी है। इसके नकारात्मक व सकारात्मक पहलुओं पर विचार–विमर्श हो रहा है और इस पर होने वाली प्रतिक्रिया की ओर भी हर ओर से विचार प्रकट किए जा रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि जो कुछ हुआ वह अमानवीय कार्य था और उसको हर वह व्यक्ति नापसंद करेगा, जिसके सीने में धड़कता हुआ दिल है, जो मानवता का दर्द रखता है और उसके लिए सोचता है, अकारण किसी को मार डालना कुरआन के शब्दों में पूरी मानवता का क़त्ल है। ग़ौर करने की बात यह है कि यह किसने किया और क्यों किया? इसके क्या कारण थे? यह घटना कोई नई नहीं है, इस प्रकार की घटनाएं होती रहती हैं और हमेशा ऐसी घटनाओं की वास्तविक से पड़ताल करने के बजाए ओछे रूप से इसको इतिहास का एक हिस्सा बनने दिया जाता है और यह प्रयास कभी नहीं किया जाता कि उसकी तह तक पहुंच कर उसके वे स्त्रोत बन्द किए जाएं जहां से ऐसी घटनांए होती हैं। यह देखने की आवश्यकता है कि पानी कहां मर रहा है। बार–बार की लीपा–पोती से बात बनने वाली नहीं है।

अजीब व ग़रीब बात यह है कि इस प्रकार की घटनाएं जब होती हैं तब कोई ऐसा संगठन इसकी ज़िम्मोदारी ले लेता है जिसका नाम मुसलमानों का हो और कभी–कभी ऐसी स्वयंभू संगठन बनाए जाते हैं जिनका उद्देश्य ही यह होता है कि उनकी आड़ में मुसलमानों पर वार किया जाए। उनका संबंध इस्लाम से तो होता ही नहीं और मुसलमानों से भी उनका दूर का भी कोई सम्पर्क नहीं होता है। बहुत सी बातें प्रिन्ट मीडिया में नहीं आ पातीं लेकिन सोशल मीडिया बड़ी हद तक आज़ाद है। इसमें हर प्रकार की सकारात्मक व नकारात्मक बातें आती हैं। इसमें कोई शक नहीं कि इसका व्यर्थ उपयोग अधिक है और किसी का सर और किसी का धड़ लगा देना एक साधारण बात है। लेकिन हर वह व्यक्ति जिसको खुला हुआ ज़हन मिला हो और वह विचार करने की योग्यता रखता हो, ऐसी बिखरी और अव्यवस्थित चीज़ों को देखकर और सुनकर वह बहुत कुछ सुराग़ लगा सकता है और वास्तविकता तक पहुंच सकता है। लेकिन लगता यह है कि जो हक़ीक़त तक पहुंच सकते हैं, वे पहुंचना नहीं चाहते, जो सारी बातों को स्पष्ट कर सकते हैं, वे करना नहीं चाहते, इसलिए कि इसमें सबसे लाभ जुड़े हुए होते हैं। बल्कि अक्सर यह देखा जाता है कि ऐसी घटनाओं की जड़े उन लोगों तक पहुंचती हैं, जो सबसे बढ़कर उस पर बवाल मचाते हैं, उन जड़ों को पानी भी वहीं से मिलता है, वे ऊपर से सारी कार्यवाहियां करते हैं और उन मासूमों को निशाना बनाते हैं जिनका दूर से भी ऐसी घटनाओं से कोई संबंध नहीं होता। लेकिन वे कभी भी उन जड़ों को खोदना नहीं चाहते जो उन घटनाओं के उद्गम स्त्रोत हैं। स्पष्ट है कि इसका क्या परिणाम होगा? कभी भी ये घटनाएं थम नहीं सकतीं क्योंकि इसके समापन के लिए जो बुनियादी कोशिशें होनी चाहिए वे की ही नहीं जातीं।

इस्लाम एक अन्तर्राष्ट्रीय धर्म है। उसकी व्यवहारिक व सामाजिक शिक्षाएं मानवता का आधार हैं और दुनिया की मुश्किलों का उसमें हल मौजूद है। उसको जितना नुमायां किया जाएगा उसकी वास्तविकताएं खुलती चली जाएंगी और उसकी ओर आकर्षण बढ़ता जाएगा। यह आकर्षण ऐसा है कि दुनिया को अपनी ओर खींचता है, बच्चे को मां की ममता चाहिए, बाप का प्यार चाहिए, हर व्यक्ति को यह मानवता प्रेम और मानवता का दर्द इस्लाम में नज़र आता है और सामाजिक संतुलन और सरल पारिवारिक जीवन इस्लाम में नज़र आता है, दुनिया उसकी ओर आना चाहती है लेकिन दुनिया की क़ौमें उसको उसकी रूह से दूर रखना चाहती हैं।

सारी दुनिया के फ़सादों और आतंकी घटनाओं के परिदृश्य में यदि विचार किया जाए तो यही यर्थाथ कार्यरत प्रतीत होता है। इस्लाम को बदनाम करने के लिए और इस्लाम की सही तस्वीर को बिगाड़ कर प्रस्तुत करने के लिए ये घटनाएं होती नहीं बल्कि करायी जाती हैं और इसके लिए भाड़े के टट्टू बुलवाए जाते हैं और कभी–कभी ये शातिर क़ौमें अपने बड़े उद्देश्य के लिए बड़ी कुर्बानी देने को भी तैयार हो जाती हैं। ....(शेष पेज 20 पर)

अल्लाह के प्रतीक की महानता

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद को प्राणियों का ध्यान अपने वास्तविक सृष्टा की ओर दिलाने के लिए प्रेषित किया। कुरआन मजीद में एक दूसरे के साथ कैसा व्यवहार व संबंध होना चाहिए इसका स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है। और इसमें सबसे महत्वपूर्ण व आवश्यक, मुहम्मद रसूलुल्लाह स0अ0 के साथ जैसा संबंध होना चाहिए उसकी ओर इशारा किया गया है। यद्यपि आप स0अ0 इनसान थे, लेकिन उसके साथ–साथ आप नबी भी थे और नबी की देख–रेख और उसकी सरपरस्ती प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह की ओर से होती है। इसलिए नबी की ग़लती, ग़लती नहीं रहती। यदि नबी से जल्दी में कोई ग़लत निर्णय हो जाए जो विशेष रूप से उसी की राय से हो तो फ़ौरन ऊपर से एहसास दिला दिया जाता है कि यह ग़लत है तुम इसको इस तरह से करो। मानो नबी को अल्लाह का पूरा संरक्षण प्राप्त होता है, इसीलिए नबी से ग़लती नहीं होती।

इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति अल्लाह तआला की महानता व उसकी शान के बारे में सोच भी नहीं सकता। वह ज़ात केवल यही नहीं कि सारे संसारों का पालनहार है, ख़ुदा है, परवरदिगार है, बल्कि उसकी महानता, उसके जलाल की शान इतनी ज़्यादा है कि उसको हर ख़ास व आम समझ नहीं सकता, क्योंकि अगर इस दुनिया में अल्लाह की ज़ात के साथ जो चीज़ ख़ास है उसका एक कणमात्र भी आ जाए तो यह दुनिया हिल जाती है। उसके भार व उसकी ताक़त का संतुलन नहीं हो पाता है। जब तूर पहाड़ पर मूसा अलै0 ने तजल्ली (अल्लाह के प्रकाश) की इच्छा की तो अल्लाह तआला का कहा कि मेरी तजल्ली को यह पहाड़ बर्दाश्त नहीं कर सकता, तो तुम कैसे उसको झेल सकते हो? लेकिन हज़रत मूसा अलै0 के कहने पर अल्लाह तआला ने जब उनको हल्की से तजल्ली दिखायी तो हज़रत मूसा अलै0 बेहोश होकर गिर पड़े और पहाड़ जल गया। देखने वालों ने बताया कि वह पहाड़ अब भी जली हुई हालत में नज़र आता है। यही कारण है कि इस संसार में अल्लाह तआला अपना संदेश प्रत्यक्ष रूप से नहीं अपितु फ़रिश्तों के द्वारा भेजते हैं। फ़रिश्तों को अल्लाह तआला ने प्रकाश से बनाया है, अतः वे उन चीज़ों को उठा सकते हैं लेकिन फ़रिश्ते भी इन संदेशों को पहले नबियों को देते हैं और नबी इनसानों को सुनाता है।

यदि अल्लाह तआला की ज़ात से किसी चीज़ का संबंध हो जाए तो वह चीज़ भी महान व सम्मानित हो जाती है। इस दुनिया में चार चीज़ें ऐसी हैं जिनका संबंध अल्लाह तआला से है और उनको "शआएरुल्लाह" (अल्लाह का प्रतीक) समझा जाता है। इसीलिए उनकी महानता भी बढ़ी हुई है। शअीरह अरबी में शेआर से है और शेआर उस कपड़े को या उस चीज़ को कहते हैं जो हर समय मनुष्य के शरीर से लगी रहे, जैसे बनियान, कुर्ता–पाएजामा यद्यपि शेरवानी या कोट पहनना या चादर ओढ़ना इस से अलग है। इसको आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग में लाया जाता है, हर समय नहीं पहना जाता, तो जो लिबास शरीर से बिल्कुल लगा हुआ रहता है, उसको अरबी में शेआर कहा जाता है। इसी प्रकार दीन की वे चीज़ें जो अल्लाह तआला से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित हैं वो दीनी शेआर यानि इस्लामी प्रतीक में सम्मिलित हैं। इसीलिए हज की विभिन्न चीज़ों को शेआर कहा जाता है। हर मुसलमान पर प्रतीकों का सम्मान करना आवश्यक समझा जाता है। इसलिए कि उनका संबंध सीधे अल्लाह से होता है, कुरआन मजीद में आता है: "जो अल्लाह के प्रतीक का सम्मान करता है तो यह उसके दिल के तक़्वे की बात है।" तक़्वे का अर्थ निग्रह व संयम का है। आदमी का अपने गुनाहों व बुरी बातों से बचना तक़्वा है। हर बुरी बात, अल्लाह की अवज्ञा, और जिस कार्य से अल्लाह

तआला ने मना किया, और जो चीज़ अल्लाह तआला को पसंद नहीं है और जो चीज़ें अल्लाह को पसंद नहीं हैं उनसे अपनेआप को बचाना तक़वे में शामिल है। मालूम हुआ कि अस्ल तक़वा यह है कि जो चीज़ भी अल्लाह तआला से संबंधित हो, उसका दिल में सम्मान होना चाहिए।

अल्लाह के प्रतीक के रूप में चार चीज़ों को गिना जाता हैः

1. रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहि अलैहि वसल्लम)
2. कुरआन मजीद
3. बैतुल्लाह शरीफ़
4. नमाज़

ये वे चीज़ें हैं जिनका अल्लाह से विशेष संबंध है। इसीलिए उनके साथ बहुत एहतिमाम करने की आवश्यकता है और उनसे अपना संबंध बहुत ही मुख़लिसाना और अच्छी नियत के साथ स्थापित करने की आवश्यकता है। अल्लाह तआला ने जहां–जहां ईमान की बात बतायी है, वहां नमाज़ का भी उल्लेख है। फ़रमाया गया कि शिर्क न करो और नमाज़ पढ़ो। नमाज़ को ज़िक्र के साथ जोड़ दिया गया है। मानो एक ओर से यह बात कह दी गयी कि नमाज़ वही छोड़ता है जो काफ़िर है। मुसलमान नमाज़ छोड़ ही नहीं सकता है। यह बात उसकी शान के ख़िलाफ़ है। इसलिए कि अल्लाह का उससे विशेष संबंध है और नमाज़ मोमिन की मेराज है, यानि अल्लाह के दरबार में उसकी हाज़िरी है। नमाज़ के द्वारा उसका अल्लाह से निकटतम संबंध स्थापित हो जाता है। इसलिए नमाज़ अल्लाह का महान प्रतीक है।

कुरआन मजीद भी चूंकि अल्लाह का कलाम है और उसका अल्लाह से प्रत्यक्ष संबंध है। इसीलिए काबा भी अल्लाह का प्रतीकों में से एक प्रतीक है क्योंकि वहां अल्लाह के नूर की बारिश होती है और उसका संबंध अल्लाह की ओर जोड़ा जाता है। इसको बैतुल्लाह यानि अल्लाह का घर कहा जाता है। अतः इसका भी सम्मान और इससे निकटता को अपने लिए उन्नति, भलाई का साधन समझना आवश्यकय है। अल्लाह के घर का सम्मान यह है कि अल्लाह के घर की परिक्रमा की जाए क्योंकि वहां परिक्रमा करना नफ़िल पढ़ने से ज़्यादा सवाब का काम है और यदि कोई व्यक्ति परिक्रमा न भी करे तो केवल बैठकर बैतुल्लाह शरीफ़ को देखता ही रहे। अपनी आंखो उससे लगाता रहे यह भी उसका सम्मान है और उससे मनुष्य को आत्मिक उन्नति प्राप्त होती है।

रसूलुल्लाह स0अ0 का सम्मान भी अल्लाह के प्रतीकों में है, क्योंकि आप स0अ0 को भी अल्लाह ने अपना लिया है और अल्लाह तआला ने साफ़ फ़रमा दिया हैः "अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करना चाहते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा, अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला निहायत रहम करने वाला है।" (आले इमरानः 31) इस आयत से अल्लाह के रसूल स0अ0 के स्थान व पद का अनुमान लगाया जा सकता है। एक दूसरी जगह पर मुसलमानों को संबोधित करते हुए यह भी कह दिया गयाः "अल्लाह के रसूल में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है।" (सूरह एहज़ाबः 21) आप स0अ0 को अल्लाह तआला ने मुकम्मल इनसान बनाया, जैसे कोई माडल या नमूना होता है, उसको देखकर आदमी वस्तु की वास्तविकता को समझता है और सोचता है कि किस प्रकार उसकी नक़ल की जाए। इसी प्रकार आप स0अ0 को अल्लाह तआला ने मनुष्यों के लिए श्रेष्ठ नमूना बनाया है। मनुष्य यदि बेहतर से बेहतर इनसान बनना चाहता है तो वह हुज़ूर स0अ0 की नक़ल करे, आपके तरीक़े को अपनाए, आपकी सुन्नत पर अमल करे, तो वह अल्लाह के यहां प्रिय हो जाएगा, निकटतम हो जाएगा, इसलिए कि अल्लाह तआला ने उस व्यक्तित्व को अपने साथ विशिष्ट कर लिया है।

जब परिस्थितियां अनुकूल हों और हवा अनुरूप रहे, जब किसी मसलक पर क़ायम रहने पर ईनाम मिलता हो और फूल बरसाए जाते हों। तो उस समय उस मसलक पर क़ायम रहना और उस अक़ीदे का इज़हार करना कोई बहादुरी और मर्दानगी नहीं। लेकिन जब परिस्थितियां प्रतिकूल हों हवा आपके विरोध में तेज़ हो उस समय उस मसलक पर दृढ़ता से डटे रहना बड़ी मर्दानगी का काम है और बड़ी वफ़ादारी और बड़ी नमकहलाली की बात है।

नमाज़ मोमिन की मेराज

मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०)

नमाज़ की पाबन्दी करने के बारे में कुरआन व हदीस में जितनी चेतावनी दी गयी है उतनी चेतावनी दूसरे किसी कार्य के बारे में नहीं आयी। क्योंकि अल्लाह तआला ने नमाज़ के अन्दर असाधारण विशेषताएं रखी हैं कि यदि कोई भी व्यक्ति नमाज़ की वैसी पाबन्दी करे जैसा कि उसका आदेश है तो उसके अन्दर वे सारी विशेषताएं जिनका अल्लाह तआला ने वादा किया है वे स्वयं ही पैदा होना आरम्भ हो जाएंगी इसलिए कि नमाज़ मोमिन को मेराज में मिला हुआ एक उपहार है। जो नमाज़ पढ़ने वाले को मेराज प्रदान करता है, अल्लाह के रसूल स0अ0 चूंकि अल्लाह के महबूब और लाडले हैं, अल्लाह ने आपको अपने पास बुलाया और नमाज़ का तोहफ़ा अल्लाह ने अता फ़रमाया, और चूंकि आप स0अ0 सारे दर्जों पर फ़ाइज़ हैं, इसलिए आपको दरजात तय करने की ज़रूरत नहीं थी, बल्कि अल्लाह ने आपको सारे दरजात तय करवा दिए थे। आपको श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया था लेकिन आपकी उम्मत को अल्लाह तआला ने यह आसानी दी है कि अगर वे भी उन स्थानों को पाना चाहते हैं तो कुछ कार्य करने होंगे।

कामों के अन्दर सबसे बड़ी चीज़ अल्लाह की रज़ामन्दी है। जिससे बढ़कर कोई चीज़ नहीं है। जिसको कुरआन में 'रिज़वान मिनल्लाहि अकबर' कहा गया है। और ज़ाहिर है जो चीज़ बड़ी है वह अकबर (बड़े) से ही मिल सकती है। और अकबर क्या है? इसका जवाब खुद कुरआन मजीद में दिया गया है। "अल्लाह का ज़िक्र बड़ा है" और क्योंकि नमाज़ सम्पूर्ण रूप से अल्लाह का ज़िक्र ही है इसलिए इस कार्य से उसकी रज़ा का प्राप्त होना संभव है। मानो की नमाज़ से अल्लाह के ज़िक्र का सवाब मिलेगा अतः यदि हमारी नमाज़ सही है तो हम उसके द्वारा ज़िक्र करने वाले बन जाएंगे और फिर अल्लाह की रज़ा पाने वाले भी हो जाएंगे। जिससे बढ़कर कोई कामयाबी नहीं है। इसीलिए सहाबा का जो श्रेष्ठ स्थान हुआ और उनको "वे अल्लाह से राज़ी, अल्लाह उनसे राज़ी" का परवाना मिला, वह इसी नमाज़ के अच्छा होने का परिणाम था इसलिए कि नमाज़ स्वयं में असाधारण है।

नमाज़ को एक ओर तो मेराज का साधन बनाया गया है कि यह मोमिनों की मेराज है और दूसरी ओर अल्लाह तआला ने नमाज़ को चार चीज़ों का संग्रह बनाया हैः शरीर का, अक़्ल का, दिल का, रूह का, मानो कि इस्लामी कार्यों में यह कार्य आंशिक रूप से दूसरे इस्लामी कार्यों के यर्थाथ को भी समाहित किए हुए है। इसीलिए अगर विचार करें तो पता चलेगा कि रोज़े में आदमी खाना पीना छोड़ देता है उसी तरह नमाज़ में भी छोड़ देता है, क्योंकि जितनी देर कोई व्यक्ति नमाज़ पढ़ेगा उतनी देर तक खा–पी नहीं सकता। इसी प्रकार हज में आदमी उठता है, बैठता है, सफ़ा व मरवा का चक्कर काटता है तो नमाज़ को भी एक रूप में नहीं रखा गया है बल्कि लगातार उठना बैठना रखा गया है। मानों के नमाज़ सेहत का भी एक साधन है कि आदमी एक जगह पर बैठ नहीं सकता, बल्कि कभी खड़े होने का आदेश है तो कभी बैठने का, यहां तक कि मन भी लगा हुआ हो तब भी नहीं बैठ सकते और उसके साथ–साथ नमाज़ के लिए फ़रमाया कि जब नमाज़ को आओ तो बेहतरीन लिबास पहन कर आओ। मालूम हुआ कि मामूली लिबास पहन कर मस्जिद में आना सही नहीं है बल्कि हैसियत के मुताबिक़ जितना अच्छा हो सकता है उतना अच्छा लिबास पहन कर अल्लाह के दरबार में हाज़िर होना चाहिए क्योंकि नमाज़ में एहतिमाम का तक़ाज़ा है।

नमाज़ का एक फ़ायदा यह भी है कि अगर हमारी नमाज़ अच्छी होगी तो हमारे आमाल ख़ुद अच्छे होते चले जाएंगे। हम मुनकिरात छोड़ते चले जाएंगे और नेक कामों की तरफ़ अपनेआप ही बढ़ते चले जाएंगे। इसलिए कि इसके अन्दर अल्लाह ने ऐसा असर रखा है कि अगर कोई बन्दा नमाज़ सही पढ़ता है तो उसका अक़ीदा ठीक हो जाता है। क्योंकि अल्लाह ने किसी ग़ैर के आगे झुकने की जितने रूप हो सकते थे उन सबसे बचने के लिए उन सभी चीज़ों को नमाज़ के अन्दर रख दिया है। लिहाज़ा ग़ैर के सामने झुकने का मामला ही ख़त्म हो गया। यानि किसी के सामने हाथ बांधना, रुकूअ करना, सजदा करना, अदब से बैठे रहना, यह नमाज़ के साथ ख़ास है जिनको बन्दा जब नमाज़ में करता रहेगा तो किसी और के सामने नहीं करेगा।

इसीलिए नमाज़ के बहुत से दर्जे हैं। पहला दर्जा तो यह है कि इनसान रूह वाली नमाज़ पढ़े, दूसरे यह कि उसके साथ जिस्म वाली भी हो, तीसरा यह कि इसी के

साथ दिल वाली नमाज़ भी हो, चौथा दर्जा यह है कि उसके साथ अक़्ल वाली नमाज़ भी हो। अगर यह चारो चीज़ें किसी को प्राप्त हो जाएं तो उसकी नमाज़ बहुत श्रेष्ठ मानी जाएगी लेकिन आजकल बहुत से लोगों को धोखा हुआ और वे यह समझे कि अगर रूह वाली नमाज़ पढ़ लें तो जिस्म वाली की आवश्यकता नहीं, और अक़्ल वाली नमाज़ पढ़ ले तो दिल वाली नमाज़ की आवश्यकता नहीं या दिल वाली नमाज़ पढ़ लें तो अक़्ल वाली नमाज़ की आवश्यकता नहीं। हालांकि ऐसा नहीं है बल्कि नमाज़ इन चारों के संग्रह का नाम है। अतः यदि कोई व्यक्ति उन चारों चीज़ों के साथ पढ़ेगा तो उसकी असाधारण उन्नति होगी। लेकिन आजकल साधारणतयः हम लोग केवल जिस्मानी नमाज़ पढ़ते हैं, वह भी सही तरीक़े पर नहीं पढ़ते हैं। इसलिए कि जिस्मानी नमाज़ में भी इस बात का ध्यान आवश्यक है कि सर से लेकर पैर तक हमारा खड़ा होना सही हो, रुकुअ व सजदे में हमारी निगाह सही हों, यह पता हो कि नाक कहां रखी जाएगी, उंगलियां कैसे रखी जाएंगी, हाथ कैसे रखे जाएंगे, यह सारी चीज़ें ठीक हो जाएंगी तो जिस्मानी नमाज़ सही हो जाएगी।

हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0 ने फ़रमायाः यदि कोई व्यक्ति जिस्मानी नमाज़ ही पढ़ता है तो ख़ुदा के वास्ते उसी नमाज़ को वह किसी हद तक सही रूप से अदा करने वाला बन जाए, ताकि किसी न किसी दिन उस नमाज़ का मज़ा भी पाए। इसी प्रकार मौलाना शेख़ यहया के कथनों में से एक कथन नक़ल करते थे कि एक बादशाह ने अपने चमन में हर तरह के पेड़ पौधे लगाए और जब वे जाने लगे तो अपने बेटे को बुलाया और कहाः यह सारे पेड़–पौधे जो लगे हुए हैं यह सब जब तुम्हारी निगरानी में आएं तो उनको बाक़ी रखना या न रखना तुम्हारी मर्ज़ी है लेकिन यह याद रहे कि फ़लां घास चाहे जितनी ही सूख जाए मगर उसको बाक़ी रखना है। उखाड़ना नहीं है। यहां तक कि अगर उसकी लकड़ी ही बाक़ी रह जाए तो भी उसको निकाल कर मत फेंकना। लेकिन लड़का नई शिक्षा प्राप्त था। अतः उसने कहा कि अब तो बहुत उन्नति हो गयी है और अच्छे–अच्छे पौधे आ गए हैं जिनसे पूरा चमन महकता है और यह घास अकारण ही बीच में सूखी हुई है। इसको भी निकाल कर फेंक देना चाहिए। अतः उसने उस घास को निकाल कर फेंक दिया तो उसमें से फ़ौरन काला सांप निकला और उसको काट लिया जिसके बाद यह पता चला कि अगर यह सूखी घास यहां बाक़ी रहती तो उसका असर यह था कि उस जगह पर सांप नहीं आ सकता था, लिहाज़ा शेख मुनीरी रह0 ने इस घटना के परिदृष्य में फ़रमायाः नमाज़ का भी यही मामला है कि हर हाल में पढ़ते रहना चाहिए, वरना मामला बिगड़ जाएगा, लेकिन इस जिस्मानी नमाज़ के साथ कोई व्यक्ति रूहानी व आरिफ़ाना नमाज़ चाहता है तो उसका उदाहरण हज़रत मौलाना ने यह दिया है कि जिस प्रकार पानी के अन्दर मछली होती है जिसको बिना पानी के चैन नहीं आता है, ऐसे ही इनसान का दिल मस्जिद में लगा रहना चाहिए ताकि दिली नमाज़ का मज़ा भी पा सके।

इसी तरह यदि कोई व्यक्ति शारीरिक व हार्दिक नमाज़ के साथ अक़्ल वाली नमाज़ भी पढ़ना चाहता है तो, तो अक़्ली नमाज़ के बारे में क़ुरआन मजीद में फ़रमाया गया हैः "यानि नमाज़ के क़रीब मत जाओ कि तुम नशे की हालत में हो, यहां तक कि तुमको मालूम होना चाहिए कि तुम क्या कह रहे हो, उसी से यह भी मालूम हुआ कि नमाज़ में जो कुछ पढ़ा जाए उसको समझ कर पढ़ना चाहिए, क्योंकि मुसलमान बेअक़्ल नहीं होता है लिहाज़ा हम जब नमाज़ पढ़ रहे हों तो नमाज में भी हमको सोच–समझ कर पढ़ना चाहिए, क्योंकि उस समय हम अल्लाह के दरबार में हाज़िर होते हैं। इसलिए उस समय यह मालूम होना ज़रूरी है कि हम उससे क्या मांग रहे हैं लेकिन अगर उसके माने ही न मालूम हों जो हम उससे मांग रहे हों कि रुकूअ में क्या कहा, सजदे में क्या कहा, तो नमाज़ अक़्ल वाली नहीं रहेगी, क्योंकि हमने यही नहीं समझा कि हम अल्लाह के सामने खड़े होकर क्या कह रहे हैं।

इसीलिए हदीस में आता है कि अल्लाह की इबादत इस तरह करो जैसे उसको देख रहे हो वरना यह तो तय ही है कि अल्लाह तुमको देख रहा है और अगर यह मन बन जाए कि अल्लाह हमको देख रहा है तो आदमी ज़्यादा चौकन्ना होता है जैसे कि किसी अंधे व्यक्ति को किसी बादशाह या अफ़सर के सामने लाया जाए और उसके कान में कह दिया जाए कि उसके सामने बादशाह बैठा है, तो उसकी हालत ज़्यादा ख़राब हो जाएगी, क्योंकि वह देख नहीं पा रहा है, बल्कि उसके शरीर की ऐसी स्थिति होगी कि लोग उसको सांत्वना देंगे लेकिन उसकी तुलना में यदि यह कहा जाए कि अल्लाह तुमको देख रहा है तो यह ज़्यादा बड़ी बात है इसीलिए अगर यह हालत हमारी हो जाए तो नमाज़ का मज़ा आ जाए।

पवित्र जीवनी
क़ुरआन करीम के आइने में

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

आदर्श नमूना

कुरआन मजीद में जगह–जगह रसूलुल्लाह स0अ0 की पैरवी का आदेश दिया गया है। अनुसरण के अध्याय में यह बात अतिमहत्वपूर्ण है कि जिसकी पैरवी करनी है वह अपनी ज़ात में जीवन का एक ऐसा आदर्श नमूना रखता हो जो हर एक के लिए आकर्षण का कारण हो। जिसको देखकर अपने जीवन के उतार–चढ़ाव समझ में आएं। जिसकी रोशनी अंधेरों को दूर कर दे और मार्ग प्रकाशित कर दे। जो ऐसे सम्पूर्ण मानवजीवन का मार्गदर्शक हो जिसके मार्गदर्शन में कठिन से कठिन मार्ग पर भी चलना सरल हो सके। सृष्टा पूरी सृष्टि को संबोधित करते हुए फ़रमाता है: "यक़ीनन तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल स0अ0 में बेहतरीन नमूना मौजूद है।" (अलएहज़ाब: 21)

विशेषता से संतुलन उत्पन्न होता है और संतुलन विशेषता की निशानी है और विशेषता की पराकाष्ठा का परिणाम है "उत्तम नमूना" उत्तम जब ही होता है जब वह सम्पूर्ण हो। अल्लाह के आख़िरी हज़रत मुहम्मद स0अ0 को अल्लाह तआला ने पिछले सभी नबियों के विशेषताओं का संग्रह बनाया।

सभी नबियों को अल्लाह तआला ने अपनी–अपनी क़ौम के लिए नमूना बनाया लेकिन आख़िरी नबी को सारे लोगो के लिए और क़यामत तक के लिए नमूना घोषित कर दिया और आप स0अ0 की ज़ात व विशेषताओं को हर प्रकार के बाह्य व आन्तरिक विशेषताओं से परिपूर्ण ऐसा उत्तम बनाया कि उस जैसा न पहले हुआ, न है, न होगा।

कोई भी जीवन के किसी भी हिस्से से संबंध रखता हो। वह अमीर हो या ग़रीब, राजा हो या प्रजा, विशिष्ट हो या साधारण, वह किसी का बाप हो या किसी का पति, वह किसी का भाई हो या संबंधी, छोटा हो या बड़ा, मानो जो कुछ भी हो उसके लिए अल्लाह के रसूल स0अ0 के मुबारक जीवन में नमूना मौजूद है।

अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी रह0 ने अपने अत्यन्त ही गूढ़ शब्दों में लिखते हैं: "अगर दौलतमन्द हो तो मक्का के व्यापारी और बहरीन के ख़ज़ानों के मालिकों का अनुसरण करो, अगर ग़रीब हो तो शोएब अबी तालिब के क़ैदी और मदीना के मेहमान की हालत सुनो, अगर बादशाह हो तो अरब के सुल्तान का हाल पढ़ो, अगर प्रजा हो तो क़ुरैश की प्रजा को एक नज़र देखो, अगर विजयी हो तो बदर व हुनैर के सिपेहसालारों पर एक नज़र डालो, अगर तुम पराजित हुए हो तो उहद की जंग से इबरत प्राप्त करो, अगर तुम उस्ताद हो तो सफ़ा की दर्सगाह के उस्तादों को देखो, अगर शार्गिद हो तो रूहुल अमीन के सामने बैठने वाले पर नज़र जमाओ, अगर बयान करने वाले या नसीहत करने वाले हो तो मस्जिदे नबवी के मेम्बर पर खड़े होने वाले की बातें सुनो, अगर तन्हाई व बेकसी की हालत में हक़ की आवाज़ उठाना चाहते हो तो मक्के के बेयार व मददगार नबी स0अ0 का नमूना तुम्हारे सामने है, अगर तुम हक़ के फैलने के बाद अपने दुश्मनों व विरोधियों को कमज़ोर करना चाहते हो तो मक्का पर विजय प्राप्त करने वाले को देखो, अगर अपने कारोबार और अपनी दुनियावी जद्दोजहद का नज़्म करना चाहते हो तो बनी नज़ीर, ख़ैबर और फ़दक की ज़मीनों के मालिक के कारोबार को देखो, अगर यतीम हो तो अब्दुल्लाह और आमिना के जिगर के टुकड़े को न भूलो, अगर बच्चे हो तो हलीमा सादिया के लाडले बच्चे को देखो, अगर तुम जवान हो तो मक्का के एक चरवाहे की सीरत पढ़ो, अगर कारोबारी सफ़र में हो तो बसरा के कारवाने सालार की मिसालें ढूंढो, अगर अदालत के क़ाज़ी व पंचायतों के पंच हो तो काबे में सूरज की रोशनी से पहले दाख़िल होने वाले व्यक्ति को देखो जो हजरे असवद को काबे के एक कोने में खड़ा कर रहा है। मदीने की कच्ची मस्जिद में सहन में बैठने वाले मुन्सिफ़ को देखो जिसकी इन्साफ़ की नज़र में राजा व प्रजा, अमीर व ग़रीब बराबर थे, अगर तुम बीवियों के शौहर हो तो ख़दीजा और आयशा के पाक शौहर की जीवनी का अध्ययन करो, अगर औलाद वाले हो तो फ़ातिमा के बाप हसन व हुसैन के नाना का हाल पूछो, ग़रज़ तुम जो कोई भी हो और किसी हाल में भी हो, तुम्हारी ज़िन्दगी के लिए नमूना और तुम्हारी सीरत के सुधार के लिए सामान, तुम्हारे अंधेरे घरों के लिए रोशनी का चिराग़ और रहनुमाई का नूर मुहम्मद रसूलुल्लाह स0अ0 की पाक ज़िन्दगी के खज़ाने में हर समय व हर क्षण मिल सकता है।

मदीना मुनव्वरा के वे दिन जब क़ौमें मुसलमानों पर टूट पड़ीं, सख़्त सर्दी का ज़माना, उसरत का दौर, खाई खोदी जा रही है, फ़ाक़े की नौबत है, लोग पेट पर पत्थर बांधने पर मजबूर हैं, एक अल्लाह का बन्दा अल्लाह के रसूल स0अ0 से अपना हाल बयान करता है कि तो आप स0अ0 अपना पेट खोलकर दिखाते हैं कि इसमें दो पत्थर बंधे हैं, एक सहाबी खाई खोदने में लगे हुए है, एक मज़बूत चट्टान आ जाती है, आप स0अ0 के पास आकर बताते हैं, आप स0अ0 उसी हाल में जाते हैं और एक ही वार में चट्टान मिट्टी में मिल जाती है। और इस सख़्त उसरत के दिन आप स0अ0 की मुबारक ज़बान से निकलता है कि मुझे किसरा व क़ैसर के महल दे दिए गए, सहाबा किराम रज़ि0 आपके साथ हैं, आपका नमूना उन हज़रात के लिए सामने है, सख़्त से सख़्त हालात में भी उनके पांव डिगते नहीं है।

वे सब के सब अल्लाह से मुलाक़ात के इच्छुक और आख़िरत के दिन का यक़ीन रखने वाले हैं, अल्लाह के यहां बेहिसाब नेमतों के लिए, हर प्रकार की कुर्बानी के लिए हर समय तैयार हैं, वे ईमान रखते हैं कि वहां की कामयाबी केवल अच्छा नमूना अपनाने में है, इसको अपने जीवन में लाने के लिए वे सब कुछ न्योछावर कर सकते हैं।

यह आदर्श नमूना जीवन के सभी क्षणों के लिए है। वे ख़ुशी के क्षण हों या ग़म के, राहत व आराम के दिन हों या कठिनाई व परेशानी के, दोस्तों के साथ बर्ताव हो या दुश्मनों के साथ, रिश्तेदारों के साथ हो या ग़ैरों के साथ, आप स0अ0 की मुबारक ज़िन्दगी में हर हाल में नमूना है और हर एक के लिए है।

मक्का मुकर्रमा में तेरह साल का परेशानी भरा जीवन है। आप स0अ0 दावत देते हैं तो आप स0अ0 को गालियां दी जाती हैं। ताएफ़ के बाज़ार में आप स0अ0 के मुबारक बदन को ज़ख़्मी किया जाता है। आप स0अ0 को शहीद करने की साज़िश रची जाती है, मगर आप स0अ0 का नमूना क्या है, सहाबा किराम इसका नमूना हैं, उनमें कमज़ोर भी हैं और ताक़तवर भी, उनमें बदला लेने की योग्यता रखने वाले भी हैं, किन्तु आप स0अ0 का नमूना उनके सामने है, सबकुछ सुनते सहते हैं, और आप स0अ0 के तरीक़े से नहीं हटते।

बदर का मैदान है, दुश्मनों की बहुत बड़ी सेना है, सीन सौ तेरह बिना किसी तैयारी के आप के साथ हैं। आपके इशारे के इन्तिज़ार में हैं, और इससे बढ़कर मिसाल क्या होगी कि हुदैबिया में सुलह हो रही है आपके मतवाले आपके सामने हैं, बैतुल्लाह के शौक़ में निकले हैं, मगर हुक्मे नबवी के आगे सर झुका देते हैं। आपने एहराम उतारा, सर मुंडवाया, आपका नमूना ही नजात का ज़िम्मेदार है, इतनी तेज़ी में सर मुंडवाए जाने लगे कि लगता था कि कहीं सर न कट जाए। इस वक़्त मौक़ा था कि अगर उनकी तरफ़ से आज्ञा होती तो मक्का वालों से दो–दो हाथ करना क्या मुश्किल था, मगर आप स0अ0 के फ़ैसले के आगे फिर किस चीज़ की गुंजाइश थी।

कहने का तात्पर्य यह कि आप स0अ0 का आदर्श नमूना सहाबा ने जिस ईमान व यक़ीन के साथ अपनाया वह अपने आप में आप स0अ0 के आदेशों की व्याख्या भी है और क़यामत तक आने वाले लोगों के लिए एक हसीन नमूना भी, जो भी उसको देखेगा, उसको पढ़ेगा वह आगे बढ़ेगा और बढ़ता ही चला जाएगा।

यह एक अमली दावत भी है। एक ओर कुरआन है दूसरी ओर आपकी हसीन ज़िन्दगी है जो कुरआन ही का सार है। कुरआन मजीद के पढ़ने वाले कुफ़्र व शिर्क की दुनिया में कितने है, मगर आप स0अ0 के जीवन की छवि दिखने वाले हज़ारों हैं। जो भी उस सांचे में ढल जाए और आदर्श नमूने की व्याख्या बन जाए वह अल्लाह के यहां भी स्वीकृत है। और उसका जीवन सम्पूर्ण मानवता के लिए चलती–फिरती दावत है।

"यक़ीनन तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श है यानि उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और क़यामत के दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे।" की आवाज़ सहाबा ने भी सुनी और दिल में बसाई, जीवन उसके अनुसार व्यतीत किया और रहती दुनिया तक के लिए जीवन यापन का एक आदर्श छोड़ गए।

यह आवाज़ क़यामत तक आती रहेगी जिसको भी अल्लाह से मुलाक़ात और आख़िरत के दिन का यक़ीन हो और वह अल्लाह का ख़ूब ज़िक्र करता हो, उसका ध्यान रखता हो, वह उस आवाज़ पर लबबैक कहे और अपने जीवन के हर हिस्से को इस नबवी सांचे में ढालने की कोशिश करे जो हर मनुष्य के लिए एक ऐसा आदर्श है जो न कोई प्रस्तुत कर सका है और न क़यामत तक प्रस्तुत कर सकेगा।

सफलता की कुन्जी

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

अल्लाह का है "आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह का है" (बक़राः 283) सृष्टि का कण–कण उसके दरबार में सजदा करता है। "क्या आपने नहीं देखा जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, सब अल्लाह के सामने सजदा करते हैं" (हजः 18) हर एक उसके सामने झुका हुआ है। "सब के सब उसी के सामने झुके हुए हैं" (बक़राः 116) जो लोग अल्लाह को नहीं मानते वे भी क़दम–क़दम पर अल्लाह ही के मोहताज हैं, अल्लाह के दिए हुए दिमाग़ से सोचते हैं, अल्लाह की दी हुई आंखों से देखते हैं, उसी के दिए हुए कानों से सुनते हैं।

दुनिया के सभी नाफ़रमान और सरकश इनसान यह तय करें कि हम अल्लाह की बनावट में बदलाव करेंगे और देखने के लिए मुंह का इस्तेमाल करेंगे, काने से बोला करेंगे और आंखो से सुना करेंगे, तो लाख सर मारे यह काम उनके लिए संभव नहीं है। ऐसे लोग अपने इनकार के नतीजे में अल्लाह की नाराज़गी का शिकार होंगे। लेकिन उनका रोयां–रोयां यह गवाही देने पर मजबूर है कि वे अल्लाह की कुदरत के अधीन हैं और उसकी बनायी हुई व्यवस्था से एक इंच हटना भी उनके लिए संभव नहीं है। "आसमानों और ज़मीन वाले सब के सब अल्लाह के सामने झुके हुए हैं, चाहे ख़ुशी से हों या मारे–बांधे" (रअदः 15)

जब सब कुछ अल्लाह का है तो उसका हक़ सबसे बड़ा है। इबादत उसी की होगी। बन्दगी उसी की होगी। गुलामी उसी की की जाएगी। बात उसी की मानी जाएगी। हर काम उसके लिए होगा। उसके बताए हुए तरीक़े के अनुसार होगा। और उसके दिखाए हुए रास्ते पर होगा। उसने इनसानों की हिदायत के लिए रसूल भेजे, जो अपने दौर में अल्लाह के आदेशों को पहुंचाकर और इनसानों को सही रास्ता बताकर दुनिया से चले गए।

सबसे आख़िर में अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद स0अ0 को भेजा और आप स0अ0 पर नबियों के सिलसिले को समाप्त कर दिया। लोग अल्लाह को भूले हुंए थे। आप स0अ0 ने अल्लाह की इबादत का चिराग़ जलाया। लोग भटके हुए थे आप स0अ0 ने अल्लाह तक पहुंचने का रास्ता दिखाया। लोग जहन्नम में गिरने को बेताब थे आप स0अ0 ने जन्नत की दिलकश फ़िज़ा में लाकर खड़ा किया। यह आप स0अ0 थे जिनके द्वारा हमें दीन मिला, ईमान मिला, इस्लाम मिला, कुरआन मिला, ज़िन्दगी के पाक तरीक़े मिले और सबसे बढ़कर अल्लाह तआला तक पहुंचने का रास्ता मिला। इसीलिए अल्लाह तआला के बाद किसी का हक़ है तो वह आप स0अ0 की महान ज़ात है। आप स0अ0 के हक़ को अदा किए बग़ैर असंभव है कि हम अल्लाह तक पहुंचे और उसकी रज़ा पा सकें। ख़ुद अल्लाह तआला ने इसका ऐलान किया हैः "ऐ मुहम्मद स0अ0, कह दीजिए ऐ लोगो! अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरे पीछे चलो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा, और तुम्हारे सब गुनाह माफ़ कर देगा, अल्लाह तो बहुत माफ़ करने वाला, बहुत रहम करने वाला है।" (आले इमरानः 31)

आप स0अ0 का सबसे बड़ा हक़ यह है कि आप स0अ0 पर ईमान रखा जाए, आप स0अ0 से बेइन्तहा मुहब्बत की जाए, आप स0अ0 की महानता को दिल में बसाकर सच्चे मन से आप स0अ0 का अनुसरण किया जाए, आप स0अ0 की शान में ज़रा सी भी गुस्ताख़ी न हो, इससे ईमान ख़त्म हो जाता है और इनसान अल्लाह की लानतों का तौक़ अपनी गर्दनों में पहन लेता है। .....(शेष पेज 13 पर)

नमाज़ की वाजिब चीज़ें

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

पिछले अंक में हम नमाज़ की शर्तों और उसके अरकान (भाग) की बहस कर चुके हैं। हमने ज़िक्र किया है कि इन अरकान को फ़र्ज़ भी कहा जाता है। फ़र्ज़ उसको कहते हैं जो कुरआन मजीद की किसी भी आयत, हदीस–ए–मुतवातिर या हदीस–ए–मशहूर से साबित हो। और हुक्म भी बिल्कुल साफ़–साफ़ हो। इल्मी अल्फ़ाज़ में इसको इस तरह कहा जाता है कि इसका सबूत किसी ऐसी दलील से हो जो क़तई सुबूत और क़तई दलाला हो। शरीअत में जब कोई फ़र्ज़ जब इस तरह से साबित हो तो उसका करना ज़रूरी हो जाता है और उसके इनकार करने से ईमान ख़त्म हो जाता है। नमाज़ या किसी इबादत के किसी फ़र्ज को छोड़ दिया जाए तो ख़राब हो जाती और इस बात की तलाफ़ी की भी कभी कोई शक्ल नहीं होती।

हनफ़ी मसलक में इसके बाद वाजिब का दर्जा होता है। वाजिब का करना भी बहुत ज़रूरी होता है इल्मी एतबार से फ़र्ज़ और वाजिब में कोई फ़र्क नहीं होता। इसको छोड़ने से भी गुनाह होता है लेकिन इसका सुबूत उस तरह की साफ़ दलील से नहीं होता जिस तरह फ़र्ज़ का सुबूत होता है। इल्मी अन्दाज़ में इसको इस तरह कहते हैं कि वाजिब वह है जो खुली दलील से साबित हो, या तो उसका सुबूत खुला हो या तो उसकी दलालत खुली हो। इसीलिए उसके मुनकिर को काफिर नहीं क़रार दिया जाता और नमाज़ या हज का कोई भी वाजिब हिस्सा अनजाने मे छूट जाए तो तो उसकी भरपायी के लिए सजदा सहू और दम से हो जाती है, जानबूझ कर छूट जाए तो दोहराना लाज़िम हो जाता है। ये इस्तेलाह दूसरे इमामों के यहां नहीं है। इसीलिए अहनाफ़ जिन चीज़ों को वाजिब क़रार देते है उनमें से कुछ दूसरे इमामों के यहां फर्ज़ में शामिल होती है और कुछ सुन्नतों में।

जहां तक वाजिबात की तादाद का ताल्लुक़ है तो विभिन्न किताबों में अलग अलग नज़र आती है, लेकिन हक़ीक़त में उनके बीच कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है। तादाद मुख़्तलिफ़ होने की वजह यह है कि किसी ने एक वाजिब को कई हिस्से में करके उनकी तादाद अलग बयान की, किसी ने मिला के बयान किया, इसीलिए तनवीरुल अबसार में 14, नूरुल ईज़ाह में 18 और बदाए सनाए में 6 वाजिबात गिनाए गये हैं।

हम नीचे अहम वाजिबात को नक़ल कर रहे हैं।

1. तकबीर–ए–तहरीमा में अल्लाहु अकबर कहनाः ऊपर गुज़र चुका है कि तकबीर–ए–तहरीमा नमाज़ के फ़र्ज़ में से है लेकिन ख़ास ''अल्लाहु अकबर'' से नमाज़ शुरू करना वाजिब है। इसके बजाए अल्लाह की अज़मत पर दलालत करने वाला कोई दूसरा शब्द जैसेः ''अल्लाहु आज़म'' कह देने से नमाज़ की शर्त तो अदा हो जाएगी, लेकिन वाजिब छूट जाएगा।

इसलिए हदीस शरीफ़ में आपने नमाज़ में ग़लती करने वाले को नमाज़ दोहराने का आदेश दिया और नमाज़ का तरीक़ा तफ़सील से समझाया, इसमें यह बात भी फ़रमायी, ''फिर क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करो और तकबीर कहो।'' हज़रत आयशा रज़ि0 फ़रमाती हैंः आप स0अ0 नमाज़ की शुरूआत तकबीर से किया करते थे।

2. फ़र्ज़ की पहली दो रकआतों में और वित्र, सुनन और नवाफ़िल की तमाम रकआतों में पूरी सूरह फ़ातिहा का पढ़ना इमाम और अकेले नमाज़ पढ़ने वाले पर वाजिब है। अगर एक आयत भी जानबूझ कर छोड़ दी तो सजदा सहू करना होगा।

इसलिए कि हदीस शरीफ़ में इरशाद है कि जो शख़्स सूरह फ़ातिहा न पढ़े उसकी नमाज़ नहीं होती।

दूसरी हदीस में है कि आप स0अ0 ने फ़रमायाः जिसने कोई नमाज़ पढ़ी और सूरह फ़ातिहा नहीं पढ़ी तो उसकी नमाज़ नाक़िस है मुकम्मल नहीं है।

जहां तक मुक्तदी का ताल्लुक़ है तो उसके लिए हुक्म यह है कि ख़ामोश रहकर इमाम की क़िरात सुने, कुरआन मजीद में इरशाद है, ''और जब भी कुरआन पढ़ा जाए तो कान लगाकर उसे सुनो और ख़ामोश रहो ताकि तुम पर रहमत हो।''

और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में हैः ''जब इमाम तकबीर कहे तो तुम भी तकबीर कहो और जब वह किराअत करे तो ख़ामोश रहो''। और उसको क़िराअत से इसलिए रोक दिया गया कि इमाम जब क़िराअत करता है तो यह क़िराअत मुक्तदियों की तरफ़ से भी हो जाती है,

इसीलिए इब्ने माजा की रिवायत में आया है: जिसका कोई इमाम हो तो इमाम की क़िराअत से उसकी क़िराअत भी हो जाती है।

3. सूरह फ़ातिहा के साथ कोई सूरह मिलाना: फ़र्ज़ की पहली दो रकआतों में और वित्र सुन्नत व नफ़िल की तमाम रकआतों में इमाम और अकेले के लिए सूरह कौसर जैसी छोटी सूहर या तीन छोटी आयतों का पढ़ना वाजिब है।

साथ में सूरह मिलाने का वजूब मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत से मालूम होता है, जिसमें आंहज़रत स0अ0 ने फ़रमाया: जिसने सूरह फ़ातिहा या उससे ज़्यादा क़िराअत नहीं की तो उसकी नमाज़ मुकम्मल नहीं।

अगर कोई शख़्स भूलने की वजह से फ़र्ज़ की आख़िरी दो रकआतों में सूरह मिला ले या आयत मिला ले तो उसकी नमाज़ में कोई फ़र्क़ नहीं आएगा और न ही सजदा सहू लाज़िम होगा। लेकिन जानबूझ कर ऐसा करना मकरूह तन्ज़ीही है।

4. किराअत फ़र्ज की पहली दो रकअतों में करना: आंहज़रत स0अ0 ने इस पर पाबन्दी लगायी है कि सूरह फ़ातिहा और ज़म सूरह फ़र्ज़ की पहली दो रकआत में किया करते थे लिहाज़ा फ़र्ज़ की पहली दो रकआत ही को क़िराअत के लिए ख़ास करना वाजिबात में से है। रकआत में किराअत की क़ज़ा ही क्यों न कर ले अनजाने में ऐसा करने पर सजदा सहू लाज़िम हो जाएगा और जानबूझ कर ऐसा करने से नमाज़ का दोहराना वाजिब होगा।

5. सूरह फ़ातिहा को पहले पढ़ना: फ़र्ज़ की पहली दो रकआतों और वित्र और सुन्नत इत्यादि की सभी रकआतों में यह भी वाजिब है कि सूरह फ़ातिहा को पहले पढ़े, सूरह या आयत को उसके बाद पढ़े, अगर इसके ख़िलाफ़ अनजाने से हो गया है तो सजदा सहू लाज़िम हो जाएगा और जानबूझ कर किया है तो नमाज़ दोहरानी होगी।

6. सूरह फ़ातिहा की तकरार न करना: फ़र्ज़ की पहली दो रकआतों और वित्र व सुन्नत इत्यादि की तमाम रकआत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह मिलाना वाजिब है, लिहाज़ा अगर सूरह फ़ातिहा दो बार पढ़ दी तो सजदा सहू वाजिब हो जाएगा और अगर पूरी सूरह फ़ातिहा की तकरार नहीं की तो अगर तीन बार "सुब्हानि रब्बियल आला" कहने के बराबर सूरह फ़ातिहा पढ़ दी तब भी सजदा सहू लाज़िम होगा। उससे कम में नहीं होगा। इसका हिसाब लगाया तो मालूम हुआ कि इसमें मुकर्ररा हुरूफ़ 14 हैं इसको तीन गुना करने पर 42 होंगे और 42 हुरूफ़ 'य' पर ख़त्म होते हैं, जिहाज़ा सूरह फ़ातिहा का तकरार य तक होगा तो सजदा सहू लाज़िम होगा। इससे कम तकरार की तो सजदा सहू लाज़िम नहीं होगा।

7. जहरी नमाज़ों में जहर करना: इमाम के लिए उन नमाज़ों में जहर करना वाजिब है जिनमें जहर का हुक्म है। और ये नमाज़ें हैं: फ़ज्र की दोनों रकआत, मग़रिब और इशा की पहली दो रकआत, ईदैन, और जुमा की दोनो रकआत, रमज़ानुल मुबारक की तरावीह और तरावीह की तमाम रकआत।

जहर जितने लोग हों उसी के अनुसार करना चाहिए। मुक़्तदी कम हैं तो बहुत ज़्यादा जहर करने की आवश्यकता नहीं। इसी तरह अगर लोग ज़्यादा हो तो भी ताक़त के बराबर ही जहर करना चाहिए।

8. सिर्री नमाज़ों में क़िराअत आहिस्ता करना: जिन नमाज़ों में धीरे पढ़ने का हुक्म है उनमें इमाम और मुनफ़रिद दोनों के लिए धीरे पढ़ना वाजिब है। ये नमाज़ें निम्नलिखित हैं: ज़ुहर और अस्र की चारों रकआत, मग़रिब की तीसरी रकआत, और इशा की आख़िरी दो रकआत, दिन में पढ़ी जाने वाली सभी नफ़िलें सुन्नतें।

जहर और उसकी मात्रा: जहर की छोटी सी मात्रा यह है कि दूसरे सुन लें और आला मिक़दार की कोई हद नहीं है। और सिर्र की छोटी मात्रा यह है कि स्वयं को सुना दे और आला मिसाल यह है कि शब्द सही सही अदा ले।

9. क़िराअत, रुकूअ और दोनों सजदों के बीच तरतीब: पहले किराअत करके उसके बाद रुकूअ करना उसी तरह दोनों सजदे इस तरह लगातार करना कि बीच में कोई दूसरा काम अदा न करे नमाज के वाजिबात में से है। इसीलिए अगर किसी रकात में भूले से सिर्फ़ एक सजदा किया फिर कुछ अरकान अदा करने के बाद याद आया तो वो उस छूटे हुए सजदे की क़ज़ा कर ले और आख़िर में सजदा सहू करले तो उसकी नमाज़ सही हो जाएगी। लेकिन ख़्याल रहे कि यह मसला सिर्फ़ किराअत और रुकुअ और दोनो सजदों के बीच है। इसके विपरीत रुकूअ और सजदे के बीच क़याम और रुकूअ के बीच इसी

तरह क़ायदा आख़ीर के बीच तरतीब फ़र्ज़ है। लिहाज़ा इन चीज़ों में अगर तरतीब भूल जाए जैसे रुकूअ से पहले सजदा कर ले तो हुक्म यह है कि याद आने पर रुकूअ करे फिर उसके बाद पहले जो कुछ पढ़ रखा था उसे दोहराए इसलिए कि वो सब काम शरअन ग़ैर मोतबर हो जाते हैं फिर आख़िर में सजदा सहू करे।

10. क़ौमाः फिर रुकूअ के बाद क़ौमा करना यानि रुकूअ के बाद सीधा खड़ा हो जाना भी नमाज़ के वाजिबात में से है भूले से छूट जाए तो सजदा सहू से भरपायी हो सकती है, जानबूझ कर सीधा खड़ा नहीं हुआ तो नमाज़ दोहराना वाजिब होगा।

11. दोनों सजदों के बीच जलसाः दोनों सजदों के बीच जलसा करना यानि बैठना भी नमाज़ के वाजिबात में से है।

12. तश्हहुद के बराबर क़ादा उला करनाः तीन या चार रकआत वाली किसी भी नमाज़ का दरमियानी क़ादा भी वाजिब है। नमाज़ चाहे फ़र्ज़ हो वाजिब, सुन्नत या नफ़िल।

13. कादा उला और क़ादा आख़िरा में तश्हहुद पढ़नाः दोनों कादों में तश्हहुद पढ़ना नमाज़ के वाजिबात में से है अगर पूरा तश्हहुद या उसका कुछ भी हिस्सा भूले से छोड़ दिया तो सजदा सहू वाजिब हो जाएगा।

14. पहले कादे में तश्हहुद पर इज़ाफ़ा न करनाः फ़र्ज़, वित्र और जुहर से पहली वाली चार रकआत सुन्नतों में यह भी वाजिब है कि तश्हहुद पढ़ने के बाद क़याम कर ले। अगर "अल्लाहुम्मा सल्ली अला मुहम्मद" तक दरूद शरीफ़ पढ़ दिया या उसके बराबर ख़ामोश बैठा रहा तो सजदा सहू वाजिब हो जाएगा। इससे कम पढ़ने या ठहरने से सजदा सहू वाजिब नहीं होगा।

जहां तक अस्र और इशा से पहले पढ़ी जाने वाली चार रकआत या दूसरी नवाफ़िल का संबंध है तो अगर उनमें तश्हहुद के बाद पूरा दरूद शरीफ़ भी पढ़ दिया तो कोई हज्र की बात नहीं है।

15. नमाज़ को लफ़्ज़ सलाम से ख़त्म करनाः नमाज़ से लफ़्ज़ अस्सलाम से निकलना नमाज़ के वाजिबात में से है। इसीलिए हदीस शरीफ़ में ज़िक्र किया गया हैः नमाज़ का तहरीमा तकबीर है और उसकी तहलील (जिसके बाद आदमी नमाज़ से निकल जाता है और नमाज़ की ममनूआत जायज़ हो जाती हैं) सलाम फेरना है। हज़रत आयशा रज़ि0 एक लम्बी हदीस में आंहज़रत स0अ0 की नमाज़ की कैफ़ियात बयान करते हुए फ़रमाती हैंः आंहज़रत स0अ0 नमाज़ शुरूआत तकबीर से करते थे। (फिर आख़िर में फ़रमाती हैं) और आप स0अ0 सलाम फेर कर नमाज़ ख़त्म करते थे। फ़ुक़्हा ने कहा है कि दोनों बार सलाम फेरना वाजिब है और इमाम जब पहले सलाम में अस्सलाम कह दे तो अब उसकी इक़्तदा करना सही नहीं होता है चाहे उसने अभी अलैकुम न कहा हो।

16. तादीले अरकान करनाः नमाज़ के अरकान यानि रुकूअ, सजदा इसी तरह क़ौमा और जलसा को इत्मिनान और सुकून से करना भी नमाज़ के वाजिबात में से है। इसकी हदबन्दी करते हुए फ़ुक़्हा ने लिखा है कि हर रूक्न में एक बार 'सुब्हान रब्बियल आला' या 'सुब्हान रब्बियल अज़ीम' कहने के बराबर पर उज़्व अपनी जगह पहुंचा कर ठहरा दिया जाए। अगर ऐसा नहीं किया जैसे रुकूअ से उठते समय बिल्कुल सीधा खड़ानहीं हुआ, कुछ झुका–झुका ही था कि सजदे में चला गया या सीधा तो हुआ लेकिन इतनी कम देर ठहरा कि एक बार सुब्हान रब्बियल आला नहीं पढ़ा जा सकता था। इसी तरह रुकूअ में अंग के क़रार पाने के पहले ही उठ गया। या सजदे में अंगों के क़रार पाने से पहले उठ गया। या दोनों सजदों के बीच सजदे में सीधा बैठे बग़ैर दूसरा सजदा कर लिया तो उसने एक वाजिब छोड़ दिया है और वो भी जानबूझकर लिहाज़ा सजदे सहू से काम नहीं चलेगा नमाज़ फिर से पढ़नी पड़ेगी। इसीलिए हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है फ़रमाते हैं, एक शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुआ इस हाल में कि आंहज़रत स0अ0 मस्जिद के एक कोने में बैठे हुए थे फिर उन्होंने नमाज़ पढ़ी फिर आप स0अ0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपको सलाम किया तो नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया, वअलैकस्सलाम लौट जाओ और नमाज़ पढ़ो इसलिए कि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। इसलिए वो लौट गया और नमाज़ पढ़ी फिर आया और सलाम किया तो आपने फ़रमाया वअलैकस्सलाम लौट जाओं और नमाज़ पढो, इसलिए कि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी तो उस शख़्स ने तीसरी बार या उसके बाद अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल स0अ0! मुझे सिखा दीजिए आपने फ़रमायाः जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो मुकम्मल तरीक़े से पूरे आदाब का ख़्याल रखते हुए वुज़ू करो, फिर क़िब्ले की तरफ़ रूख़ करो और तकबीर अल्लाहु अकबर कहो, फिर

जो कुरआन तुम्हारे साथ है उसमें से जो हो सके पढ़ो, फिर रुकूअ करो यहां तक कि इत्मिनान के साथ रुकूअ कर लो, फिर उठो यहां तक कि सीधे खड़े हो जाओ फिर सजदा करो यहां तक कि इत्मिनान से सजदा करा लो फिर उठो यहां तक कि इत्मिनान से बैठ जाओं फिर सजदा करो, यहां तक कि इत्मिनान से सजदा करो, फिर उठो यहां तक कि सीधे खड़े हो जाओ। पूरी नमाज़ में इसी तरह करो।

इसी तरह हज़रत आयशा रज़ि0 ने आंहज़रत स0अ0 की नमाज़ की कैफ़ियत तफ़सील से बतायी है। उसमें यह भी है कि जब आंहज़रत स0अ0 रुकूअ से अपना सर उठाते थे तो जब तक सीधे खड़े न हो जाएं सजदा नहीं करते थे और जब सजदे से सर उठाते थे तो दूसरा सजदा उस वक़्त तक नहीं करते थे जब तक सीधे बैठ न जाएं।

17. वित्र की नमाज़ में कुनूत पढ़नाः वित्र की नमाज़ में दुआए कुनूत पढ़ना वाजिब है। लेकिन वाजिब किसी भी दुआ के पढ़ने से अदा हो जाएगा कुरआन की कोई भी दुआ पढ़ ले। ख़ास तौर से अल्लाहुम्मा इन्ना नस्तईनुका पढ़ना सुन्नत है। वाजिब नहीं है। कुछ उलमा ने लिखा है कि कुनूत पढ़ने के लिए तकबीर कहना भी वाजिबात में से है लेकिन सही क़ौल के मुताबिक़ ये तकबीर वाजिबात में से नहीं है। इसी तरह बाज़ लोगों ने वित्र की तीसरी रकआत के रुकुअ की तकबीर को भी वाजिब लिखा है लेकिन उनकी बात भी सही नहीं है।

18. ईदैन की तकबीरातः ईदैन की नमाज़ में कुछ छ तकबीरात है। तीन पहली रकआत में किरआत से पहले और सना पढ़ने के बाद और तीन दूसरी रकआत में क़िरात के बाद। उनमें से हर तकबीर वाजिब है। उसको इमाम के साथ मुक़तदियो के लिए भी ज़बान से धीरे धीरे कहना वाजिब है। इसमें बाज लोगों से कोताही हो जाती है लिहाज़ा ख़्याल रखने की ज़रूरत है।

ईदैन की दूसरी रकआत में रुकूअ की तकबीर। ईदैन की दूसरी रकआत में रूकूअ की तकबीरात भी वाजिबात में से है। लिहाज़ा इमाम को बुलन्द आवाज़ से और मुक़्तदी को आहिस्ता से कहना चाहिए। अल्बत्ता चूंकि ईदैन में मजमा बहुत होता है और सजदा सहू करने से लोगों को संदेह हो सकता है लिहाजा अगर यह तकबीरात या और कोई दूसरा वाजिब भूले से छूट जाए तो सजदा सहू साकित हो जाता है और उसके बग़ैर नमाज़ सही हो जाती है।

शेष : सफलता की कुन्जी

"जो लोग आप स0अ0 को तकलीफ़ पहुंचाते हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।" (तौबाः 61) "बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को ज़रा सी भी तकलीफ़ पहुंचाते हैं, उनके लिए दुनिया व आख़िरत दोनों में अल्लाह की लानत है, और ऐसों के लिए अल्लाह ने रुस्वा करने वाला अज़ाब भी तैयार कर रखा है।" (एहज़ाबः 57) आप स0अ0 की इताअत के बग़ैर अल्लाह की इताअत नहीं हो सकती "जो रसूल की इताअत करता है वही अल्लाह की इताअत करता है।" (निसाः 80)

आप स0अ0 पर ईमान लाने के बाद यह तीन बड़े आधारभूत अधिकार हैं जिनको जानना, मानना और उनकी मांग के अनुसार अपने जीवन को ढालना हर मुसलमान के लिए आवश्यक है। मुहब्बत, महानता और अनुसरण। इन तीन आधारों पर रसूलुल्लाह स0अ0 के अधिकारों का भवन स्थापित है। हम आप स0अ0 की उम्मत हैं। क्या हम आप स0अ0 के अधिकारों को अदा करने के लिए गंभीर हैं? क्या हमने सीरत पाक का उस भावना के साथ अध्ययन किया है? क्या सीरत की घटनाओं के द्वारा हमारे अन्दर ईमान की वही गर्मी पैदा होती है जो वांछित है?क्या हमारे दिलों से रसूलुल्लाह स0अ0 की मुहब्बत के स्त्रोत उसी तरह फूट कर निकलते हैं जिस तरह के स्त्रोत हमारे बुज़ुर्गों के सीनों से निकलते थे? रसूलुल्लाह स0अ0 की महानता की छाप हमारे दिलो पर है कि केवल ज़बान ही तक सीमित है? दिल पर हाथ रखकर सोंचे कि हम आप स0अ0 की उम्मत होने की हैसियत से आप स0अ0 की आंखों की ठण्डक हैं या ग़फ़लत का शिकार होकर आप स0अ0 के लिए तकलीफ़ की वजह बन रहे हैं? जिस मासूम व महान हस्ती से हमने वफ़ा का वादा किया था क्या हमने उस वादे को निभाया है!!

हक़ को अदा करने के लिए बुनियादी शर्त हक़ को पहचानना है। हर व्यक्ति पर यह वाजिब है कि वह रसूलुल्लाह स0अ0 के हक़ को अदा करने में पूरी ज़िन्दगी वक़्फ़ कर दे। अल्लाह की मुहब्बत की मंज़िल आप स0अ0 के अधिकारों की राहों से होकर गुज़रती है।

ख़ुदा की पनाह

सऊदुल हसन ग़ाज़ीपुरी नदवी

यदि यह ख़बर सही है तो बहुत ही अफ़सोसनाक व दर्दनाक है कि मध्यपूर्व में गृहयुद्ध के कारण लाखों की संख्यां में पलायन करने वालों में कुछ बदबख़्त ऐसे भी हैं जो यूरोप में पनाह पाने के लिए ईसाईयत अपना रहे हैं। यह कैसे मुसलमान हैं जो आख़िरत की ऐश पर दुनिया की ऐश को वरीयता दे रहे हैं। यह संख्यां चाहे कितनी ही कम क्यों न हो लेकिन है तो चिन्ता की बात। स्पेन के बाद शायद यह दूसरी घटना होगी कि इस्लाम का कलिमा पढ़ने वालों ने जान बचाने के लिए ईसाईयत स्वीकार की होगी। कहा जा सकता है कि इस प्रकार की जितनी भी परेशानियां सामने आ रही हैं और आगे भी आ सकती हैं ये सब हमारे बुरे कामों, बदनसीबी और हमारे आपसी टकराव का परिणाम हो सकती हैं।

यूरोपियन देशों ने पहले तो यह किया कि मध्यपूर्व में अशांति फैलायी। अत्याचारियों का सहयोग किया। साफ़–सुथरा चरित्र रखने वालों को अपमानित किया और तकलीफ़ पहुंचायी और दुष्चरित्रों का सहयोग किया। फ़िलिस्तीन और ईराक़ व सीरिया में, लीबिया और मिस्र में और दूसरे देशों में जो तबाही आयी और जानी व माली नुक़सान हुआ, उसके मुजरिम यही हैं। अख़बारी सूचना से मालूम हो रहा है कि मुसीबत में पड़े लोगों की एक बड़ी संख्यां यूरोपियन देशों की तरफ़ बढ़ रही है। बर्लिन के ट्रिनटी चर्च में मुस्लिम देशों से पलायन करने वालों की एक बड़ी संख्यां नज़र आती है जिन्हें धड़ल्ले के साथ ईसाईयत में दाख़िल किया जा रहा है और कितने ही बदबख़्त मुसलमान हैं जो पनाह हासिल करने के लिए ईमान की दौलत से वंचित हो रहे हैं।

कहीं ऐसा तो नहीं कि यूरोप ने दम तोड़ती हुई ईसाईयत को नयी ज़िन्दगी देने के लिए मुस्लिम देशों में "बहारे अरब" का शासखाना खड़ा किया और वहां इतनी उथल–पुथल मचायी कि लाखों लोग देश छोड़ने पर मजबूर हुए और जो लुटे–पिटे लोग यूरोप में दाख़िल हो रहे हैं उन्हें ईसाईयत स्वीकार करायी जा रही हो। बहरहाल जो कुछ भी हो यह ख़बर बहुत ही चिंताजनक है और आंखो को खोलने वाली है, केवल मध्यपूर्व के मुसलमानों के लिए नहीं बल्कि दुनिया भर में आबाद मुसलमानों के लिए चिन्ता का क्षण है।

भारतीय मुसलमानों पर 1947 ई0 में इसी प्रकार की मुसीबत आयी थी। जिसमें लाखों लोगों ने अपनी जानें गवायीं थीं और लाखों लोगों ने देश छोड़ा था। पाकिस्तान की ओर पलायन करने वाले या दूसरे शब्दों में कहें कि फ़रारी अपनाने वालों का हाल यह था कि वे एकदम निहत्थे थे और उनके क़ातिल असलहों से लैस। लेफ़्टिनेन्ट सुर्वी लाल जो एक ऐसे ही काफ़िले की निगरानी कर रहा था (जो पटियाला की सिख रियासत से सरहद पार करके पाकिस्तान जा रहा था) बताता है कि क़रीबी देहात के सिख गिद्धों की तरह मुसलमानों के क़ाफ़िले का पीछा कर रहे थे। हज़ारों औरतों अग़वा हुईं, उनके मां–बाप, भाइयों के सामने उनके साथ दुराचार हुआ। केवल पंजाब में हज़ारों मुस्लिम औरतों को अपनी हवस का निशाना बनाया गया। एक अनुमान के अनुसार उस समय तक़रीबन 36 हज़ार मुस्लिम औरतों का अपहरण हुआ।

जब तक हालात ख़राब थे और दंगों का ख़तरा था, मुसलमानों के अक़ीदे की जंग में झोंकने वाले फ़सादी बिल ढूंढते फिर रहे थे और अब जबकि हालात बेहतर हैं तो वे नये सिरे से अक़ीदे में बिगाड़ पैदा करने के फित्ने को हवा दे रहे हैं। कल की बात है कि एक मौलवी साहब ने किसी मुसलमान के जनाज़े मे शिरकत करने से इसलिए मना कर दिया कि उनकी निगाह में उसका अक़ीदा सही नहीं था। मुसलमानों को ऐसे लोगों से होशियार रहना चाहिए। जब अल्लाह न करे आग लगेगी और फ़साद होंगे तो ये फिर बिल तलाश करते नज़र आएंगे। मुसलमान क्यों नहीं समझते कि अमरीका और इस्राईल से जबसे हमारे देश के संबंध हुए हैं और इस्राईल ने हमारे मामलों में दखल देना शुरू किया है इस प्रकार के ख़तरे बढ़ गए हैं। तफ़सील में जाने की ज़रूरत नहीं है। सबकुछ हमारी निगाहों के सामने है। आवश्यकता सचेत होने और कार्य करने की है।

समाज की दो गंभीर बीमारियाँ

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

हदीस: हज़रत जाबिर रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः अत्याचार से बचो क्योंकि अत्याचार क़यामत के दिन अंधकारमय होगा और लालच से भी बचो क्योंकि इसी बीमारी में लोग तुमसे पहले हलाक (विनष्ट) हो गए। इसने उनको इस बाप पर उभारा कि वे ख़ून बहांए और हराम की गयी चीज़ों को सही समझें।

फ़ायदा: उपरोक्त हदीस में दो ऐसी गंभीर बीमारियों की ओर इशारा है और उनसे बचने का आदेश दिया जा रहा है, जो मानव समाज के लिए नासूर हैं। शरीअत के अनुसार अत्याचार की परिभाषा यह है कि मनुष्य अल्लाह के द्वारा निश्चित की गयी सीमाओं को लांघ जाए। अल्लाह का कथन हैः "और जो अल्लाह की सीमाओं को लांघता है तो उसने अपने साथ ज़ुल्म किया" (तलाकः 1) अल्लाह तआला की सीमाएं बहुत वृहद हैं। इसमें इबादत, मामले, सामाजिकता सभी चीज़े दाख़िल हैं। इसीलिए अगर मनुष्य इबादत में लापरवाही करता है तो मानो उसने अपने ऊपर अत्याचार किया और लेन–देन व सामाजिकता को ठीक नहीं रखता तो उसने अपने साथ दूसरों पर भी अत्याचार किया। अपने ऊपर अत्याचार इस तरह कि कल क़यामत के दिन दूसरों पर अत्याचार करने के कारण उसके सभी अच्छे काम बेकार हो जाएंगे। इसीलिए यह यक़ीन रखना की अल्लाह के अधिकारों की जैसी–तैसी पूर्ति कर देने से जन्नत का परवाना मिल जाएगा पर्याप्त नहीं है, जब तक कि बन्दो के अधिकारों का पूरा ध्यान न रखा जाए। हदीसों में अत्याचार जैसे कार्यों की मनाही और उसकी गंभीरता का उल्लेख किया गया है। ईमानवालों को विशेषतयः इस बात के लिए सचेत किया गया है कि वे एक दूसरे पर अत्याचार न करें और उसको अंधकारमय की संज्ञा देकर यह बताया गया है कि यदि समाज में इसका अस्तित्व होगा तो न घर के लोग सुरक्षित रहेंगे न ख़ानदान सुरक्षित रहेगा, न समाज उन्नति कर सकेगा, और न देश में अमन व शांति की स्थापना हो सकेगी, बल्कि सभी को एक प्रकार की बेचैनी की हालत हो जाएगी जिसमें जीवन व्यतीत करना मुश्किल होगा।

हदीस शरीफ़ में दूसरी गंभीर बीमारी "लालच" की ओर निशानदेही की गयी है। लालच का मतलब यह है कि मनुष्य का मन लोभ का आदी बन जाए और अपने लाभ की प्राप्ति हेतु माता–पिता, भाई–बहन, रिश्तेदार, पड़ोसी, समाज किसी का भी ध्यान न रखे, चाहे उसके लिए उसको ख़ून बहाना पड़े, आपसी झगड़े करने पड़ें और रंजिशों से ही क्यों न गुज़रना पड़े। कुरआन मजीद में इनसान के नफ़्स का उल्लेख करते हुए लालच के संबंध में बयान किया गयाः "और मन में लालच आगे आगे रहती है।" (निसाः 128) इसी के साथ एक दूसरी जगह पर उन लोगों को सफल बताया गया जो इस बीमारी से बचे हैं। अल्लाह का इरशाद हैः "और जो भी अपने मन की लालच से बचा लिया गया तो ऐसे लोग ही सफल हैं।" (हश्रः 9)

उपरोक्त हदीस में लालच से बचने का आदेश देते हुए यह बताया गया है कि इसमें पड़े होने के कारण तुमसे पहले की क़ौमें हलाक़ हुईं। इस परिदृष्य में आज के समाज पर यदि एक विहंगात्मक दृष्टि डाली जाए तो पता चलेगा कि आज खून ख़राबे, ज़ुल्म व ज़्यादती और आपसी लड़ाइयों को जो तूफ़ान उमड़ा हुआ है उसके पीछे यही ''लालच'' अपना काम कर रही है। स्थिति इतनी नाज़ुक हो चुकी है कि माता–पिता को अपनी औलाद से पैसे के आधार पर मुहब्बत होती है। अगर उनका कोई लड़का उनकी हैसियत के अनुसार उनका सहयोग करने लायक़ नही तो उससे प्रेम भी कम होने लगता है। इसी तरह औलाद का हाल यह है कि बुढ़ापे में अपने माता–पिता की सेवा इस उद्देश्य से करने का प्रयास करते हैं कि उनके बाद उनकी सारी सम्पत्ति के मालिक वे हों और उनके दूसरे भाई–बहन इससे वंचित रहें। वास्तविकता यह है कि लालच का ऐसा तूफ़ान खड़ा हो गया है जिससे समय रहते निपटने की आवश्यकता है। वरना हदीस शरीफ़ का संदेश हमारे सामने है कि हमसे पहले की क़ौमों के विनष्ट होने का कारण यही ''लालच'' थी।

परलोक पर आस्था

मुहम्मद नजमुद्दीन नदवी

नाशवान संसार से मनुष्य के जाने के बाद आख़िरत का जीवन आरम्भ होता है। मरने के बाद आख़िरत के उस जीवन पर अहले सुन्नत वल जमाअत का अक़ीदा है। इस अक़ीदे व आस्था का लाभ यह है कि मनुष्य को जितना मरने के बाद के इस जीवन का ध्यान होगा उतना ही वह गुनाहों को करने से बचता रहेगा। उसका यह कार्य उसके दिल व दिमाग़ के सुकून का आसान साधन होगा। अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी रह0 के अनुसारः "मनुष्य के कार्यों के सुधार के लिए उसके दिल व दिमाग़ का सुधार अतिआवश्यक है और मनुष्य के दिल व इरादे पर यदि कोई चीज़ शासन करती है तो वह उसकी आस्था या अक़ीदा है।" मौत की याद मन की इच्छाओं पर क़ाबू पाने का बेहतरीन साधन है। अल्लाह के रसूल स0अ0 का कथन है, "लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ मौत को खूब याद रखा करो।"

दुनिया के जीवन से आख़ितर के जीवन की ओर जाने के लिए मौत की हैसियत एक पल की है। यदि मनुष्य के कार्य इस दुनिया में अच्छे हैं तो उसके लिए ''मौत'' उसके प्रिय से मिलाने का साधन होती है और यदि उसके कर्म इस योग्य नहीं होते तो यही मौत उसके लिए सदा की ज़िल्लत व रुस्वाई भी बन सकती है। मौत एक ऐसी हक़ीक़त है जिससे कोई बच नहीं सकता है। जबसे दुनिया बनी है न जाने कितने ताक़तवर व क्षमतावान, नबी व सच्चे लोग, उलमा व सुधारक आए किन्तु ऐसा कोई नहीं आया जिसको मौत का सामना न करना पड़े। मरने के बाद इनसान जिस मरहले को तय करता है वह आख़िरत की ज़िन्दगी का मरहला है। जिससे हर किसी को गुज़रना है। क़यामत तक जितने लोग इस दुनिया से आख़िरत की तरफ़ जितने लोग जाएंगे वे सब क़यामत तक आलमे बरज़ख़ में रहेंगे। कुरआन मजीद में भी इसका उल्लेख हैः "और उनके पीछे एक पर्दा है उस दिन तक जब वे उठाए जाएंगे।" (मोमिनूनः 100)

मरने के बाद बरज़ख़ व आख़िरत की ज़िन्दगी का अक़ीदा रखने के साथ यह अक़ीदा रखना भी ज़रूरी है कि मनुष्य के कर्मों के बदले का कार्य भी उसके क़ब्र में जाने के बाद ही शुरू हो जाता है। क़ब्र का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि उसको मिट्टी में दफ़न किया जाए तभी उसकी बदले की क्रिया आरम्भ होगी, बल्कि यदि कोई मरने के बाद जला दिया जाए, उसकी राख को समन्दर में बहा दिया जाए, या वह किसी जानवर का निवाला बन जाए इन परिस्थितियों में भी उसके बारे में यही यक़ीन रखा जाएगा कि वह अनुसार अपनी क़ब्र में और क़यामत के दिन उसको वहीं से उठाकर खड़ा किया जाएगा। अल्लाह का इरशाद हैः "और अल्लाह उन सबको उठाएगा जो क़ब्रों में हैं" इसके साथ–साथ यह भी मानना आवश्यक होगा कि क़यामत आने से पहले बरज़ख़ की ज़िन्दगी जो कि बीच का क्रम है इसमें हर मरने वाला बदले का अधिकारी होता है। कुरआन मजीद में बरज़ख़ की दुनिया के अज़ाब के बारे में फ़रमाया गयाः "और फ़िरऔन वालों पर बुरी तरह का अज़ाब टूट पड़ा, वह आग है जिस पर सुबह व शाम उनको तपाया जाता है और जिस दिन क़यामत आएगी (कहा जाएगा कि) फ़िरऔर के लोगों को सख़्त अज़ाब में दाख़िल करो।"

वर्तमान समय में अश्लीलता के आम होने के कारण एक बड़ा वर्ग इस चिन्ता में लिप्त भी पाया जाता है कि मरने के बाद क़ब्र में सवाल व जवाब व बदला दिये जाने की कोई हक़ीक़त नहीं, जबकि बहुत सी आयतों व सही हदीसों इसके पक्ष में अवतरित हुई हैं जिनसे मालूम होता है कि मरने के बाद हर व्यक्ति से सबसे पहले तौहीद व रिसालत और उसके दीन के बारे में सवाल किया जाता है। अगर बन्दा इन सवालों के जवाब दे देता है तो अल्लाह के ईनाम का हक़दार होता है वरना हमेशा की सज़ा का अधिकारी होता है। लेकिन इन सरीह आयात व रिवायात के बाद भी यदि कोई व्यक्ति आख़िरत के इस साफ़ सुथरे अक़ीदे का इनकार करता है तो उसके लिए बड़े डरने की बात है कि वह इस्लाम के तीन बुनियादी अक़ीदों में से एक अक़ीदे का इनकार करता है जिसकी इस्लामी शिक्षा में बुनियादी हैसियत है।

ISIS

किसनी हक़ीक़त – किसना फ़साना ?!

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

आई एस आई एस (इस्लामिक स्टेट ऑफ़ ईराक़ एण्ड सीरिया) यानि एक ऐसा लड़ाकु गिरोह जो ईराक़ व सीरिया में इस्लामी साम्राज्य की स्थापना के विषय से सरगर्म हुई। लेकिन जब उसने अपना कार्यक्षेत्र ईराक़ व सीरिया से बढ़ाया तो उसे केवल आई एस यानि इस्लामिक स्टेट कहा जाने लगा।

आई एस आधारभूत रूप से शिया व सूफ़ीवाद विरोधी संगठन है। इसका पहला परिचय तो "अलक़ायदा आफ़ ईराक़" के नाम से होता है। यह गिरोह 2006 में अमरीका के विरोध में खड़ा हुआ जिसका नेतृत्व अबु मुसअब ज़रक़ावी के हाथों में था, जो अमरीका के हवाई हमले में मारा गया। ज़रक़ावी के बाद अलक़ायदा आफ़ ईराक का नाम ख़त्म हो गया और यह संगठन ''आई एस आई एस'' के नाम से पहचाना गया जिसकी बाग़डोर अबू उमर अलबग़दादी के हाथों में रही। 2010 ई0 में अबू उमर अलबग़दादी की शहादत के बाद अबूबकर अलबग़दादी को नेता चुन लिया गया।

इस संगठन में सद्दाम हुसैन की बास पार्टी के वे सदस्य तेज़ी से शामिल हुए जो अमरीकी क़ब्ज़े के बाद पकड़े जाने से बच रहे थे और वे अंडरग्राउन्ड हो गए थे। ईराक़ में चुनाव के बाद जो सरकार बनी वह बहुत ही कमज़ोर थी जिसका लाभ उठाकर सद्दाम समर्थकों ने दोबारा अपनी शक्ति संगठित कर ली और अपने शासन को दोबारा प्राप्त करने के लिए अबूबकर अल बग़दादी के साथ मिल गए।

ईराक़ के कमज़ोर शासन व सीरिया के गृहयुद्ध के कारण इस संगठन को फलने–फूलने का ख़ूब मौक़ा मिला और जल्द ही उसने ईराक़ के कई क्षेत्रों पर चढ़ाई शुरू कर दी और भौगोलिक एतबार से सुन्नियों के सबसे बड़े प्रान्त अलअम्बार और फिर दैरुज़्ज़ूर के क्षेत्र पर क़ब्ज़ा कर लिया जहां आयल रिफ़ाइनरीज़ हैं। इसके अलावा ईराक़ व सीरिया की सीमाओं के दोनों ओर के बड़े हिस्से भी उसके क़ब्ज़े में आ गए।

2012 ई0 में सीरिया में गृहयुद्ध की स्थिति बन गयी और बश्शारुल असद की सेना ने मार–काट आरम्भ कर दिया तो विभिन्न जिहादी संगठनों के साथ अलक़ायदा ने भी "जबहतुन्नस्र" नामक एक संगठन की स्थापना की घोषणा की और मुहम्मद अलजौलाती को उसका नेता चुना। इस संगठन से सीरिया में दूसरे जिहादी संगठनों को शक्ति प्राप्त हुई। अबूबकर अलबग़दादी ने भी मुहम्मद अलजौलाती के साथ मिलकर सीरिया के गृहयुद्ध में भाग लिया लेकिन अबूबकर अलबग़दारी की हिंसात्मक कार्यवाहियों और सभी जिहादी संगठनों पर अपना नेतृत्व थोपने के प्रयास के कारण जल्द ही दोनों में अत्यधिक मनमुटाव हो गया और नौबत आपसी युद्ध तक पहुंच गयी। अलक़ायदा के अमीर ऐमन ज़वाहिरी ने दोनो के बीच सुलह का प्रयास भी किया लेकिन परिणाम दोनों के अलगाव की सूरत में निकला। जौलाती को ऐमन ज़वाहिरी का समर्थन प्राप्त रहा और अबूबकर ने जौलाती और उनके समर्थक दूसरे जिहादी संगठनों के विरुद्ध लामबंदी की मुस्लिम संगठनों की आपसी फूट से बश्शारुल असद की सेना को संभलने का मौक़ा मिल गया।

2014ई0 में अबूबकर अलबग़दादी ने अपनी कार्यवाहियों का केन्द्र सीरिया के बजाए ईराक़ को बनाया और 1300 की सेना के साथ नई गाड़ियो और रॉकेट लान्चरों से लैस होकर मोसिल पर हमला बोल दिया। वहां लगभग 22 हज़ार ईराकी सैनिक मौजूद थे लेकिन इस हमले से वे संभल न सके और किसी मुक़ाबले के बग़ैर उन्होंने हथियार डाल दिए। फिर आसानी के साथ क्षेत्र व आबादी के लिहाज़ से मोसिल जैसा महत्वपूर्ण क्षेत्र बग़दादी के क़ब्ज़े में आ गया जिससे ईराक की सरकार दहल कर रह गयी।

मोसिल पर क़ब्ज़ा बहुत ही असाधारण घटना थी। अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया ने उसे बहुत महत्व दिया। लोग हैरान हुए कि एक लड़ाकू गिरोह ने छोटे से समय में इतनी बड़ी राजनीतिक सफलता कैसे प्राप्त कर ली। इससे पहले न किसी चरमपन्थी संगठन को ऐसी सफलता मिली थी और न कोई संगठन इतना व्यवस्थित हो सका था।

इस सफलता के बाद बग़दादी ने अपने अधीनस्थ क्षेत्रों में ख़िलाफ़त की घोषणा कर दी, और स्वयं को "मुसलमानों का ख़लीफ़ा" की हैसियत से प्रस्तुत किया। आई एस आई एस नामक उनका संगठन पूरी दुनिया के

ध्यानाकर्षण का केन्द्र बन गया।

आई एस आई एस को विभिन्न संगठनों का समर्थन भी प्राप्त है जिसमें विशेषतयः "जैशुर्रिजालु अत्तरीक़तुल नक़शबन्दिया" जैसे महत्वपूर्ण संगठन जिसके प्रमुख इज़्ज़तुद्दौरी जो सद्दाम हुसैन के नायब के तौर पर जाने जाते थे। आई एस आई एस में अफ़ग़ानी, चीनी, तुर्क, उज़्बैक और दुनिया भर के विभिन्न लोग शामिल हैं। मोसिल पर क़ब्ज़ा करने वाले आई एस के कमान्डर का संबंध चेचन्या से है।

सोशल मीडिया पर होने वाला प्रोपगन्डा नवजवानो के लिए आइ एस को आकर्षित बनाकर प्रस्तुत करता है। जबकि संकीर्ण सोच रखने वाले व्यक्ति आइ एस के संदेश को इस्लाम समझ कर इसमें दाख़िल होते हैं और इस प्रकार वे आइ एस में शामिल होने को दीन की ख़िदमत करना समझते हैं। इसके अतिरिक्त सीरिया में जारी गृहयुद्ध के परिणाम में निकले हुए शरणार्थी और दूसरे देशों से बेघर हुए लोग भी आइ एस में शामिल हैं। अपने लिए कोई नजात की राह न पाकर इस प्रकार के लोग केवल भोजन व आसरे की ख़ातिर आइ एस से अपनी वफ़ा का ऐलान कर बैठते हैं और उसे अपनी सलामती की ज़मानत समझते हैं। इस प्रकार आइ एस को विभिन्न क्षेत्रों के माहिर लोग भी उपलब्ध हैं जो पूरी लगन के साथ अपनी ज़िम्मेदारी अदा करते हैं।

आइ एस का मूलभूत नियम यह है कि लोगों में ख़ौफ़ व दहशत पैदा करो क्योंकि ख़ौफ़ व दहशत ही आगे बढ़ने की राह आसान करती हैं। और अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उसने जिहाद के अर्थ को ग़लत ढ़ंग से पेश किया है। जन्नत का शौक़ दिला कर आत्मघाती हमलो पर आमादा किया। इसीलिए उसने अपने अधीनस्थ क्षेत्रों में इस्लामी क़ानून (सज़ाओं) को लागू करने में हिंसा का रास्ता अपनाया। ऐसी अदालतों की स्थापना की जो सख़्त निज़ाम पर चलती हैं। यानि यहां सज़ा के तौर हाथ भी काटे जाते हैं, पत्थर भी मारा जाता है और दूसरी कैपिटल सज़ाएं भी लागू हैं। आश्यर्च की बात तो यह है कि इस संगठन ने इतने कम समय में अपने सभी सरकारी कार्यालय भी स्थापित कर लिए हैं। अपना पासपोर्ट भी जारी कर दिया है। और यह भी कहा जाता है कि उसने अपनी करेन्सी भी जारी कर दी है।

आइ एस का बुनियादी लक्ष्य यह है कि इस्लाम पर यक़ीन न रखना एक ऐसा जुर्म है जिसकी सज़ा मौत, अंगो का काटना या ग़ुलामी है। जबकि इस्लाम इस नज़रिये के बिल्कुल ख़िलाफ़ है और वह दीन में कभी भी किसी भी तरह की ज़बरदस्ती को पसंद नहीं करता है। लेकिन आई एस अपने इस नज़रिये को जबरन लागू करना चाहती है और अपने विरोधियों के सर सबके सामने धड़ से अलग कर देती है। जिन्दा बचने वाले मर्द व औरत कहीं छिप जाते हैं या आइ एस के ग़ुलाम बनने पर मजबूर हो जाते हैं। आइ एस ने ईराक़ में मुसलमानों के साथ सदियों से जीवन व्यतीत करने वाले "यज़ीदियों" को भी देश से बाहर कर दिया। औरतों पर सख़्त पाबन्दियां लगा दीं और ग़ुलामी के जिस विचार की इस्लाम ने जड़ें काट दी थीं आइ एस ने उसे दोबारा ज़िन्दा कर दिया।

आइ एस ने इस्लामी साम्राज्य की स्थापना की घोषणा की और इस क्रम में विभिन्न बयान भी जारी किए, इन्टरनेट पर ख़ूब प्रोपगन्डा भी किया, जिसका नतीजा यह निकला कि एक बड़ी संख्यां आइ एस की समर्थक हो गयी और वे उसे इस्लाम का प्रतिनिधि और एक जिहादी फ़ोर्स समझ बैठे और सबसे बढ़कर आइ एस के काले झंडे ने जिस पर "कलिमा तैय्यबा" लिखा हुआ है और नुबूव्वत की मोहर भी बनी हुई है आम मुसलमानों के नज़दीक ज़बरदस्त ख्याति प्राप्त कर ली और फिर दुआओं में भी आइ एस का चर्चा होने लगा। मीडिया ने भी आइ एस को एक विशुद्ध इस्लामी संगठन की शक्ल दी, ठीक उसी प्रकार जैसे अमरीका–ईराक़ युद्ध के शुरूआती दौर में सद्दाम हुसैन को इस्लामी हीरो के तौर पर पेश किया यगा था। कहीं सजदा करते हुए, कहीं दुआएं मांगते हुए, तो कहीं अमीरकी फ़ौज पर गरजते हुए, जबकि उसके जुल्म व जबर की दास्तान इतिहास के सीने में दफ़न है।

ख़िलाफ़त की घोषणा के बाद आइ एस ने यह फ़रमान भी जारी किया कि अब चूंकि ख़िलाफ़त स्थापित हो चुकी है, इसलिए किसी भी संगठन या देश को यह अधिकार नहीं है कि उसके अधीन होने से इनकार करे। हर वह व्यक्ति व संगठन ईमान से फिर चुके हैं जो अबूबकर अल बग़दादी की ख़िलाफ़त का इनकार करते हैं। यही कारण है कि उसकी आधारभूत कार्यवाहियां खुद मुसलमानों के खिलाफ़ ही हैं, जबकि यह इस्लामी शिक्षाओं का खुला हुआ मज़ाक़ है कि मुट्ठी भर की जमाअत हिंसा का मार्ग अपना ले और अपने अत्याचार को "इस्लामी ख़िलाफ़त"

का नाम देकर ख़ुद मुसलमानों को मौत के घाट उतार दे।

आइ एस की ज़ाहिरी हालत व उसके नारों से किसी भी तरह धोखा नहीं खाना चाहिए। दूसरे राजनीतिक व चरमपंथी संगठनों की भांति वह एक प्रकार की राजनीतिक पार्टी है जिसने सत्ता प्राप्त करने के लिए हिंसा की राह अपनायी है और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इस्लाम का लबादा ओढ़ रखा है। पिछले दिनों आइ एस की ओर से स्पेन के पायलट को जिन्दा जलाने और जापान के पत्रकार का सर काट दिये जाने के वीडियो इन्टरनेट पर आए थे। जिसने दुनिया भर में सनसनी फैला दी थी और आम इनसान यह सोचने पर मजबूर हो गया था कि इस्लाम में मानने वाले इतने बेरहम और पत्थर दिल भी हो सकते हैं। इससे न केवल इस्लाम की छवि दाग़दार हुई बल्कि यूरोपीय देशों में मुसलमानों की कठिनाइयां और बढ़ गयीं।

यहां एक महत्वपूर्ण सवाल यह भी उठता है कि आइ एस जैसे खूंखार संगठन को अमरीका व इस्राईल किस नज़र से देखते हैं?तो जवाब बिल्कुल साफ़ है कि यह संगठन प्रत्यक्ष रूप से अमरीकी व इस्राईली लाभ के पक्ष में कार्यवाही कर रहा है। और ह रवह काम कर रहा है जो उनके एजेन्डे का हिस्सा है। इस्राईल को यक़ीनह कि ईराक़ के बंटवारे और जार्डन से संधि और सीरिया की तबाही के बाद "ग्रेटर इस्राईल" के लिए कोई बड़ी रुकावट नहीं। सीरिया में बश्शारुल असर के हटने से इस्राईल के लिए गोलान की पहाड़ियों पर क़ब्ज़ा भी आसान हो जाएगा जिस पर 1973ई. में सीरिया ने क़ब्ज़ा कर लिया था। जिसके कारण इस्राईल की रक्षा शक्ति कमज़ोर हो गयी थी और इस लक्ष्य की प्राप्ति में आइ एस का महत्वपूर्ण रोल है।

इसीलिए अमरीका किसी भी सूरत में मध्यपूर्व में मज़बूत शासन की स्थापना नहीं चाहता। अमरीका के जो उद्देश्य ईराक़ व अफ़ग़ानिस्तान के ख़िलाफ़ सीधे तौर पर युद्धों के द्वारा प्राप्त न हो सके थे वे आई एस के द्वारा आसानी से प्राप्त हो रहे हैं और उन्हें सीमाओं को लांघने में ज़्यादा परेशानी का सामना नहीं करना पड़ रहा है।

आज पश्चिमी मीडिया खुलकर आई एस की ख़बरें दे रहा है लेकिन उसे इस ओर से पूर्ण सन्तुष्टि है कि आई एस के कन्ट्रोल में तेल के जो भी भण्डार हैं वे कहां जा रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार क़ब्ज़े में आए तेल के कुओं से रोज़ाना आठ मिलियन यानि दस लाख बैरल पेट्रोल निकलता है और उसके द्वारा लगभग हर माह लगभग 97 मिलियन डॉलर की आमदनी होती है। अब सवाल यह उठता है कि ऐसे आतंकी संगठन का तेल अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में कैसे बिक जाता है और किन देशों को बेचा जाता है। उनकी मूल्य कौन देता है और उसके खज़ाने आई एस तक कैसे पहुंचते हैं। जबकि तेल के अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार पर अमरीका का कन्ट्रोल है और तेल का क्रय–विक्रय डॉलर में होता है। इस बारे में अमरीकी सैन्कशन और नॉटो का रोल क्या है?रूस के राष्ट्रपति ब्लीदिमीर पुतिन ने 16 नवम्बर 2015 को तुर्की में आयोजित ळ20 की सभा में पत्रकारों से कहा था कि आई एस अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में तेल बेचता है और उसे लगभग चालीस देशों का सहयोग प्राप्त है जिसमें ळ20 के कई देश भी शामिल हैं।

आज आइ एस के पास नवीन तकनीक के जो हथियार मौजूद हैं, लड़ाकू जहाज़ों को हवा में मारने की मिसाइल और दूर तक मार करने वाले रॉकेट भी मौजूद है, ऐसे में इस सवाल का उठना भी स्वाभाविक है कि आइ एस को इन असलहों की सप्लाई कहां से हो रही है? आइ एस ख़ुद हथियार तैयार नहीं कर सकती और मध्यपूर्व में किसी भी देश के पास असलहे बनाने का कारखाना नहीं है और न ही कोई देश असलहों का कारोबार करता है। यक़ीनन यह हथियार पश्चिमी देशों के सहयोग और उनके एजेंटों के द्वारा आइ एस तक पहुंचते होंगे लेकिन मीडिया या शासन कभी भी इसके बारे में कुछ नहीं कहता।

एक रिपोर्ट के अनुसार ईराक़ से अमरीकी सेना की वापसी के समय लगभग चालिस लाख हथियार बिना इस्तेमाल हुए पड़े थे जिनका मूल्य 580 मिलियन डालर बताया जाता है। उन्हें वापिस ले जाने के ख़र्चे से बचने के लिए अमरीका ने यह हथियार ईराक़ में ही छोड़ दिये थे जो आइएस के काम आ रहे हैं। इसके अतिरिक्त जब बश्शारुल असद के ख़िलाफ़ लड़ने वाली फ्री सीरियन आर्मी ने अपने लिए असलहों की अपील की थी तब अमरीका उसको असलहा उपलब्ध कराने वाला पहला देश था। लेकिन यह असलहा सीधे आई एस के दामन में पहुंचा जिनके बल पर ही आई एस एक जिहादी गिरोह से उन्नति करके मध्यपूर्व की एक ख़तरनाक लड़ाकू ताक़त बन कर उभरा है।

पश्चिमी ताक़ते आई एस को अपने उद्देश्य के लिए ख़ूब इस्तेमाल कर रही हैं। रशियन टी.वी. की एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले साथ अमरीका ने सुरक्षा का सबसे बड़ा क़रार किया था। अब इस संधि के नवीनीकरण के लिए वह आई एस को ख़तरे के तौर पर प्रस्तुत कर रहा है और आई एस प्रमुख के उस बयान को ख़ासा महत्व दे रहा है कि आई एस मक्का को सऊदी से आज़ाद कराना चाहता है। क्योंकि मक्का मुअज़्ज़मा सभी मुसलमानों का केन्द्र है इसलिए उसे ख़लीफ़ा के तहत होना चाहिए। निरीक्षकों का कहना है कि फ़्रांस में हुए हाल के हमले भी पश्चिमी लाभ का एक हिस्सा है। इन हमलो के द्वारा इस्राईल उस फ़ैसलो को ग़लत कहना चाहता है जो फ़्रांस की संसद ने हमास और देश में हमास और फ़िलिस्तीन को स्वीकार करने के संबंध में किए थे। फ़्रांस के बाद दूसरे देश भी हमास को स्वीकार करने की राह पर थे जिसे आई एस के कारण बहुत नुक़सान पहुंचा। इसके अतिरिक्त विभिन्न देशों के शरणार्थियों के लिए यूरोप को जो अपनी सीमाएं भी खोलनी पड़ीं थी उन्हें यह कहकर बन्द करने की प्लानिंग चल रही है कि शरणार्थियों के भेष में आईएस के लड़ाके प्रवेश कर रहे हैं।

इन सारी बातों के परिदृश्य में यह कहा जा सकता है कि आई एस को पश्चिमी देशों का पूरा समर्थन प्राप्त है और इस संगठन का अस्तित्व केवल अपने बल बूते पर नहीं बल्कि उन ताक़तों के बल पर है जो जल्द ही दुनिया के सामने प्रकट होकर रहेंगी।

इससे भी इनकार नहीं कि आई एस में एक बड़ी संख्या ऐसे नवजवानों की है जो इस्लामी ख़िलाफ़त की स्थापना चाहते हैं लेकिन उनके अन्दाज़ा नहीं कि वे जानबूझ कर या अनजाने में इस्लाम को ही बदनाम कर रहे हैं और उनकी कार्यवाहियों से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुसलमान परेशान हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि इस्लामी ख़िलाफ़त की स्थापना ही पूरी दुनिया की शांति कीजमानतदार है लेकिन ख़िलाफ़त अत्याचार व ज़ुल्म से प्राप्त नहीं की जा सकती है। यह हज़ार साल पुराना समय नहीं है कि जिसमें कोई गिरोह तलवार उठाए, हल्ला बोले और शासन कर ले, अपनी सत्ता क़ायम कर ले, ख़िलाफ़त अगर कभी भी होगी तो दिलों को जीतने से क़ायम होगी और उसका रास्ता दावत व शिक्षा के ज़रिए खुलेगा, गर्दन मारने से नहीं!!

शेष : हक़ीक़त या फ़साना

सोशल मीडिया पर रहने वाले इस बात से भली भांति परिचित हैं कि फ़्रांस में होने वाले हमलों में जुर्म करने वालों की लाशों की पहचान किसी हैसियत से हुई, क्या वह सब मुसलमान थे? वे कहां के रहने वाले थे इस बात की सही पड़ताल न हुई है न होगी, इसलिए कि इसके परिणाम उन लोगों के लिए बहुत नकारात्मक जो यह सब कुछ करवा कर दुनिया से इस्लाम को फेरना चाहते हैं।

आई एस के नाम पर भी जो लोग पकड़े गए उनमें कितने वे लोग हैं जो यहूदी व क्रिस्चन थे, उनका क्या उद्देश्य था और क्यों उनको इसमें शामिल किया गया इसको हर वह व्यक्ति समझ सकता है जो दूरदृष्टि रखता हो।

दुनिया को नर्क बनाने वाला कौन है?फ़िलिस्तीन में प्रतिदिन औरतें एवं बच्चे मारे जाएं, सीरिया में ख़ून की नदिया बहा दी जाएं, मिस्र में लोकतन्त्र का गला घोंट दिया जाए और बर्मा के पीड़ितो के साथ हर हद पार कर दी जाए, उनको समुन्द्र में ढकेल दिया जाए, सयुंक्त राष्ट्र संघ और दुनिया की सुपर पावर ताक़तों में किस की ज़बान खुलती है।

यह दोग़ली पॉलिसियां, साज़िशें, शातिराना चालें मानवता को दम नहीं लेने देतीं, इस आतंकवाद को दुनिया से जब तक ख़त्म नहीं किया जाएगा, किसी का सुकून की सांस लेना भी मुश्किल नज़र आता है।

आवश्यकता इस बात की है कि क़ौमों को आज़ादी दी जाए। आज़ादी का झण्डा किसी देश का समुदाय विशेष के पास न रहे, बल्कि जो भी अपने तरीक़े पर चलना चाहे, अपनी बात कहना चाहे उसको आज़ादी हो, यद्यपि वह भी अपनी बात किसी के सर पर न थोपे। सयुंक्त राष्ट्र के संविधान में इस आज़ादी को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है, लेकिन इसका मतलब शायद कुछ और है।

वर्तमान परिस्थिति में सच्चे मुसलमान की ज़िम्मेदारी सबसे बढ़कर है। वे अपने चरित्र व व्यवहार से मानवता का सहारा बनें और हर देश व हर शहर में बल्कि बस्ती–बस्ती में वह मानवता का ऐसा नमूना प्रस्तुत करें, जिसकी आज दुनिया सबसे अधिक मोहताज है।

अल्लाह की हम्द और उसका शुक्र

ज़बान के लिये ये बड़े गर्व की बात है कि वह हम्द व शुक्र के लफ़्ज़ों से तर रहे। यूँ भी ये बड़ी एहसान फ़रामोशी है कि एहसान व अच्छा सुलूक करने वाले का शुक्र न अदा किया जाये और उसकी तारीफ़ न की जाये। अल्लाह तआला ने हम पर बेशुमार एहसान फ़रमाये हैं और हर वक़्त उसकी नेमतों से हम लोग फ़ायदा उठाते रहते हैं। दाना, पानी, हवा, रोशनी, सेहत व आफ़ियत, अमन व सलामती, और उन जैसी बेशुमार नेमतें हैं जो अल्लाह तआला ने हमको आपको दे रखी हैं। जिनका कोई बदल नहीं है। उनमें से अगर कोई नेमत हमसे छीन ली जाये तो ज़िन्दगी दुश्वार हो जाये। मगर इन्सान की तबियत नाशुक्री और एहसान फ़रामोशी की तरफ़ मायल रहती है। कुरआन शरीफ़ में फ़रमाया गया है:

"और जब हम इन्सान पर ईनाम करते हैं तब वो ऐराज़ करता है और अकड़ता है और जब उसको कोई तकलीफ़ पहुंचती हैं तो वह मायूसी का शिकार हो जाता है।"

कुरआन पाक में हम्द व शुक्र का ज़िक्र

अल्लाह तआला ने अपने सारे बन्दों को एहसान मन्दी और हम्द व शुक्र की तलक़ीन फ़रमायी है। सूरह फ़ातिहा जो नमाज़ की हर रकआत में पढ़ी जाती है और कुरआन शरीफ़ की सबसे पहली सूरह है, उसकी शुरूआत भी हम्द से की गयी है:

"सब तारीफ़ है अल्लाह की जो सारे जहानों का पालने वाला है।"

फिर जगह–जगह अल्लाह ने अपने एहसानों की निशानदेही फ़रमायी है। और हम्द व शुक्र के शब्दों से अपने बन्दों को आगाह किया है। पूरे कुरआन शरीफ़ में अलग–अलग पीराओं से तारीफ़ के अल्फ़ाज़ आयें हैं। कहीं ख़ुद तारीफ़ फ़रमायी है और कहीं उन नेक लोगों का ज़िक्र है जो ख़ुदा की तारीफ़ में ज़बान हर वक़्त तर किये रहते हैं।

हम्द व शुक्र का हुक्म:

अल्लाह तआला अपने बन्दों को आकर्षित करके इरशाद फ़रमाता है:

"पस तुम लोग मुझे याद करो, मैं तुमको याद रखूंगा और मेरा शुक्र करो और नाशुक्री मत करो।" (बक़रा : १८)

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

ISSUE:12 DECEMBER 2015 VOLUME: 07

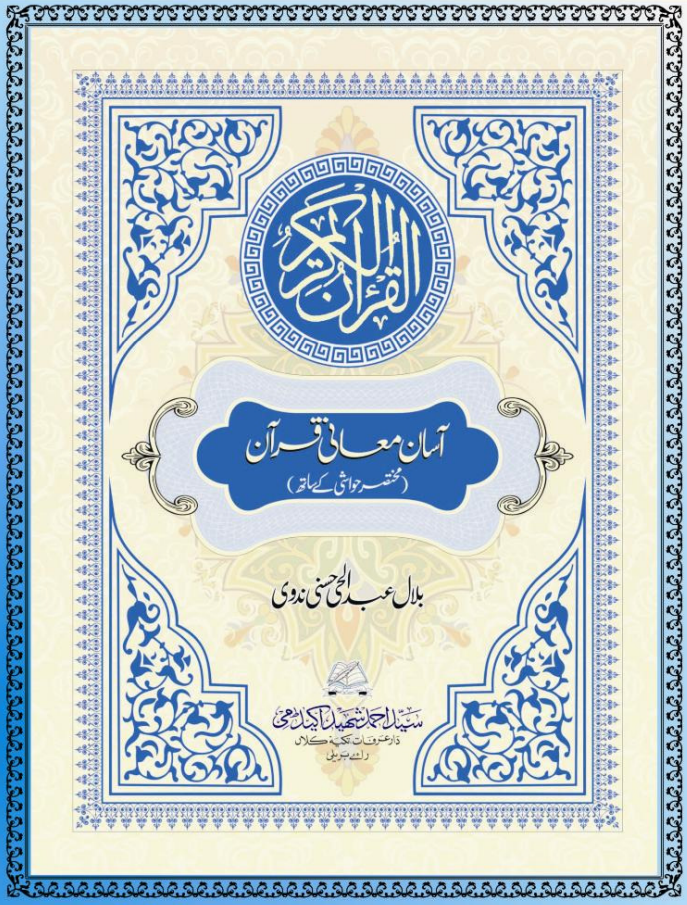

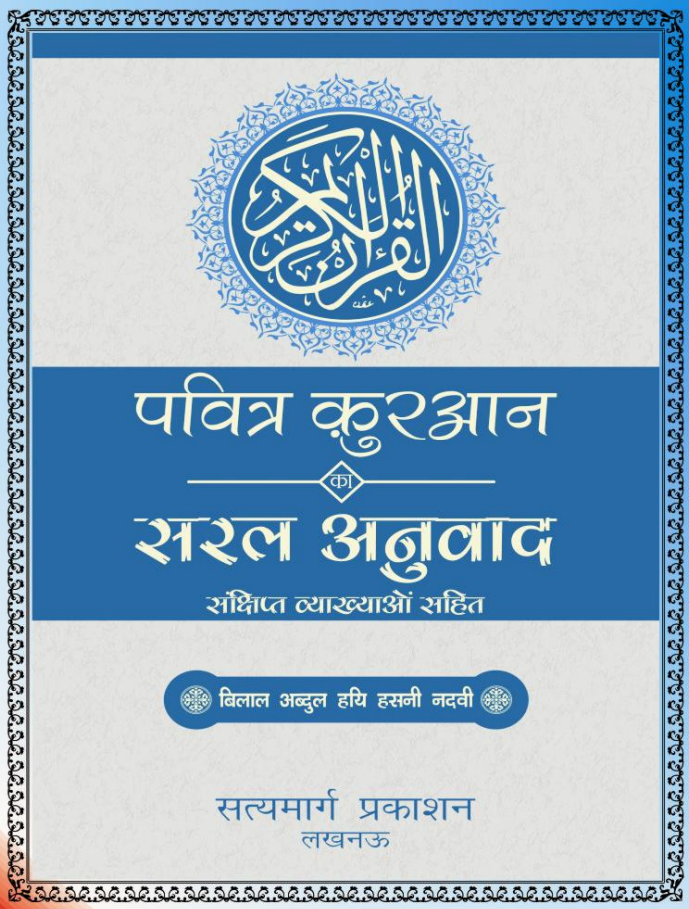

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.